

प्रकाशक :
कल्याणमल राजमल पाटनी
सिद्ध चेतना ट्रस्ट, कोलकाता

गीत-कुसुम

अशोक जैन, शास्त्री

गीत-कुसुम

(नैतिक शिक्षा एवं जैन तत्त्वज्ञान से ओतप्रोत बालगीत व कविताएँ)

जिनवर के चरणों
में विकसित,
गीत-कुसुम से
जग महकायें ॥

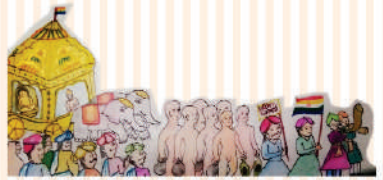
स्वानुभूति से
शिवसुख पाने,
स्वाध्याय नित
करना।

अशोक जैन, शास्त्री

चित्र एवं चित्रकार



ज्ञप्ति जैन, सागर



वर्तिका जैन, सागर



खुशी शाह, बड़ौदा





शाश्वत जैन, सागर

स्तुति जैन, सागर

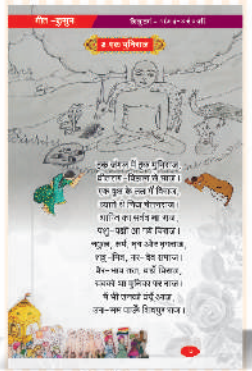
आशिका जैन, जबलपुर



स्तुति जैन, बैंगलोर

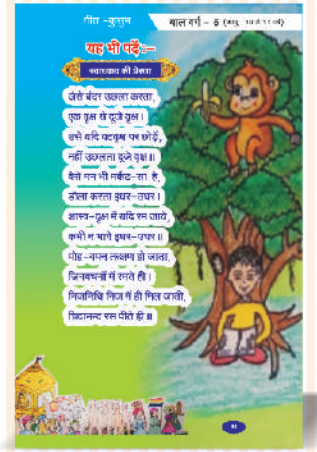


मिस्बा खान, इन्दौर



कल्याणी जैन, कानपुर

चित्र एवं चित्रकार



नियम जैन, आगरा



स्वस्ति सिंघई, सागर



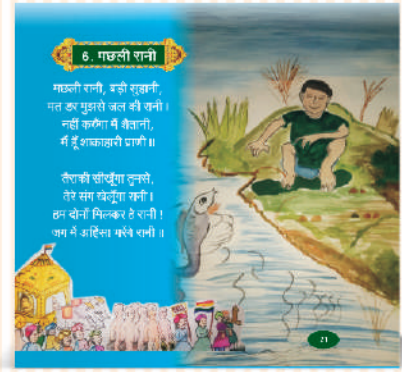
पंक्ति जैन, कोवेन्ट्री (यूके)



आयुषी जैन, इन्दौर



आस्था जैन, सागर



मुस्कान सराफ, सागर



ज्ञप्ति सिंघई, सागर

विशेष सूचना

आगामी प्रकाशन

Jain Rhymes & Poetry
(In English)
Written by
Ashok Jain, Shastri

जैन कथा पच्चीसी
(पौराणिक कथाओं का संकलन)

कल्याणमल राजमल पाटनी सिद्ध चेतना ट्रस्ट, कोलकाता का

प्रथम पुष्प

गीत-कुसुम

(नैतिक शिक्षा एवं जैन तत्त्वज्ञान से ओतप्रोत बालगीत व कविताएँ)

परिकल्पना एवं रचनाकार :

अशोक जैन

शास्त्री, एम.ए., बी.एड्

संपादक :

डॉ. प्रवीण कुमार जैन

शास्त्री, आचार्य, एम.ए, बी.एड्, बी.जे. (एम.सी.), नेट, पी.एच.डी.

ध्रुवधाम, बांसवाड़ा (राज.)

सह-संपादिका :

संध्या जैन

एम.ए., बी.एड्, शिक्षिका

सेंट अर्नोल्ड स्कूल, लालाराम नगर, इन्दौर (म.प्र.)

प्रकाशक :

कल्याणमल राजमल पाटनी सिद्ध चेतना ट्रस्ट, कोलकाता

रतन अशोक आरती रुचिका रितिका पाटनी

सह-प्रकाशक :

अकलंक-निकलंक जैन-मंच

45, ओमविहार कॉलोनी,

इन्दौर (म.प्र.) 452005 (पिन)

कल्याणमल राजमल पाटनी सिद्ध चेतना ट्रस्ट, कोलकाता का 'प्रथम पुष्प'

गीत-कुसुम

रचयिता – अशोक जैन, शास्त्री

प्रथम संस्करण – 3000 प्रतियाँ
प्रकाशन सत्र– नवम्बर 2020

वीर निर्वाण महोत्सव 2547 के उपलक्ष्य में

न्यौछावर राशि : ₹50/-
(आगामी प्रकाशन हेतु)

सम्पर्क सूत्र : अशोक जैन, शास्त्री
45, ओमविहार कॉलोनी, इन्दौर (म.प्र.)
मो. 9617560570,7999634248

प्राप्ति स्थान :-

श्री दिगम्बर जैन मंदिर,
43/2ए, पद्मोपुकुर रोड, भवानीपुर,
कोलकाता (प.बं.) 700020 (पिन),
मो. 9874751818 (अमित शास्त्री)

शाश्वत ऑप्टिकल शॉप,
गाँधी आई हॉस्पिटल, गऊघाट,
परकोटा, सागर (म.प्र.)
मो. 8962678165
(शैलेन्द्र जैन)

श्री 1008 सीमंधर जिनालय,
देवनगर कॉलोनी, पेच नं.2,
भिण्ड (म.प्र.) 477001 (पिन)
मो. 9826761410,
9826472529

मुद्रक : छाया प्रिन्टर्स, इन्दौर
मो. 8109021068 (उमंग समैया)

प्रस्तुत संस्करण के विमोचनकर्ता

श्रीमान पारस कीर्ति जैन
सुश्री पंक्ति, आप्ति, आकृति जैन
कोवेन्ट्री (यूके)

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग देने वाले साधर्मीजन –

परम सहयोगी –

* श्रीमती विद्या जैन, शैलेन्द्र जैन, सत्येन्द्र जैन, बरायठा परिवार, सागर (म.प्र.)
* सोनल, पूर्वी, आदित्य, भूमि जैन, बजाज परिवार, कोलकाता (प.बं.)
* श्री मुमुक्षु मंडल, केसली, जिला–सागर (म.प्र.)

विशिष्ट सहयोगी –

* श्रीमती सुलभा मनोज जैन, पोहरी, जिला–शिवपुरी (म.प्र.)
* श्रीमान सुनील सराफ, सागर (म.प्र.)
* श्रीमान राजेश जैन, भोपाल (म.प्र.)
* श्रीमती मीना जिनेश शाह, कोलकाता (प.बं.)
* आयुषी, आस्था, पारस जैन, परसौरिया परिवार, इन्दौर (म.प्र.)
* श्रीमान प्रदीप कुमार जैन, भिण्ड (म.प्र.)
* श्रीमान शीतल जैन (सी.ए.), रायपुर (छ.ग.)
* श्रीमान पुष्पेन्द्र कुमार जैन, पिड़ावा (राज.)
* श्री मुमुक्षु मंडल, गड़ाकोटा, जिला–सागर (म.प्र.)

प्रकाशन - सहयोगी-

* पं. निर्मलकुमारजी नवीन सिंघई, (सिंघई चश्मा), सागर (म.प्र.)
* श्रीमती साधना जैन, कोलकाता (प.बं.)
* श्रीमती सेजल अंकित सेठी, डीमापुर (नागलैण्ड)
* श्रीमान विनोद जैन, सागर (म.प्र.)
* श्रीमती डॉ. प्रीति डॉ. राजेश जैन, आगरा (उ.प्र.)
* श्रीमती नत्थी बाई जैन, रहली, जिला-सागर (म.प्र.)
* स्व. श्री आनन्दकुमार जी जैन, आनन्द मंजन, परिवार, इन्दौर (म.प्र.)
* श्रीमान संदीप जैन, अक्ष जैन, इन्दौर (म.प्र.)
* कामनी जीन्स कलेक्शन, शाहगढ़, जिला-सागर (म.प्र.)
* पं. शशिकांत जी जैन, इन्दौर (म.प्र.)
* श्रीमती कांता बी.सी. जैन, परिवार, इन्दौर (म.प्र.)
* श्रीमती आशा मथुरालाल जैन, इन्दौर (म.प्र.)
* श्रीमान आशीष जैन, शास्त्री, भिण्ड (म.प्र.)
* श्रीमान संदीप जैन, शास्त्री, बांसवाड़ा (राज.)
* सुश्री ज्ञप्ति जैन सुपुत्री विवेक जैन, सागर (म.प्र.)
* सुश्री आशी सुपुत्री आशीष सिंघई, सागर (म.प्र.)
* श्रीमती नेहा समकित जैन, जामनगर (गुज.)
* श्रीमान पारस गदिया, इन्दौर (म.प्र.)
* श्रीमती सुषमा संतोष कुमार जैन, इन्दौर (म.प्र.)



प्रस्तुत पुस्तक में चित्रांकन करने वाले नवोदित चित्रकार :-

चित्र-संकलन सहयोग :

स्तुति जैन, सागर (म.प्र.)

मुख्य चित्रकार :

वर्तिका जैन, सागर
आशिका जैन, जबलपुर

ज्ञप्ति जैन, सागर
खुशी शाह, बड़ौदा

सागर से -
स्तुति जैन, मुस्कान सराफ, शाश्वत जैन, श्रुति जैन, स्वस्ति सिंघई, ज्ञप्ति सिंघई, सात्विक जैन, आस्था जैन, आरोही जैन

आगरा से -
नियम जैन, दिव्यांश जैन, विहर्ष जैन

कोवेन्ट्री (यूके) से -
पंक्ति जैन, आप्ति जैन, आकृति जैन

बैंगलोर से - स्तुति जैन
कानपुर से - कल्याणी जैन
बुरहानपुर से - अर्णव शाह

* **बड़ागाँव से** - अनुप्रेक्षा जैन
* **जयपुर से** - प्रमिति जैन
* **बांसवाड़ा से** - अर्हम् जैन

इन्दौर से -
अनुष्का सेन्द्रे, मिस्बा खान, आयुषी जैन, अवधि गंगवाल, नवधा जैन, नंदिका जैन, श्रुताश जैन, आरोही जैन

*** मनोगत ***

प्रस्तुत कृति **गीत-कुसुम** की रचना सानन्द सम्पन्न होने में पंच परमेष्ठी और जिनवाणी माँ के प्रति मेरे हृदय में व्याप्त अपार विनय, जिनाज्ञा भंग होने का भय तथा जैनश्रुत को आधुनिक ढंग से प्रस्तुत करने का भाव और डॉ. हुकमचन्द जी भारिल्ल (छोटे दादा) का फाड़ूरोग वाला प्रसिद्ध दृष्टान्त और उनका मार्गदर्शन तथा बा. ब्र.रवीन्द्र जी 'आत्मन्' (पण्डित जी साहब) की 'रचना नहीं, रचनात्मक कार्य करो' की प्रेरणा एवं बा. ब्र.सुमत प्रकाशजी (भाई साहब) से प्राप्त प्रोत्साहन, मेरे लिए पाथेय स्वरूप और कृति को रचनात्मक व उद्देश्यपूर्ण बनाने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हुए।

डॉ. प्रवीण जी शास्त्री ने कृति को पूर्ण करने के लिए मुझे प्रेरित किया साथ ही स्वयं अथक परिश्रम करके इसका संपादन भी किया। इसके साथ ही श्रीमती संध्या जैन ने इसे उत्तम एवं उपयोगी बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

कृति को श्रेष्ठतम बनाने के लिए पं. नेमीचन्दजी जैन (सिंगपुर), भाग्यचन्द्रजी जैन (दिल्ली), शान्तिलालजी बड़जात्या, पं. शशिकांत जी, पं. सतीश जी कासलीवाल, सुधीर जी शास्त्री, पारसमणि जी जैन एवं ममता सैनी, इन्दौर, प्रेक्षा जैन, बाँसवाड़ा, पं. निर्मलकुमारजी एवं ब्र. नन्हे भैया, सागर ने उल्लेखनीय सुझाव प्रदान किये।

लेखन के दौरान ही श्रुतांश और आरोही जैन ने उत्साहपूर्वक प्रत्येक गीत सुना और उन्हें गाया भी। उनका उत्साह मुझे बालमनोविज्ञान को समझने और तदनुरूप लिखने के लिए प्रेरित करता रहा।

कृति के लिए भावपूर्ण चित्रांकन करने के लिए अथक परिश्रम करने वाले नवोदित चित्रकारों के साथ-साथ उनके माता-पिता का सहयोग भी सराहनीय रहा।

श्रीमान अशोकजी आरतीजी पाटनी, कोलकाता/सिंगापुर ने अपने ट्रस्ट से प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशित करके बालोपयोगी साहित्य सृजन को प्रोत्साहित किया।

श्रीमान पारस कीर्ति जैन, कोवेन्ट्री (यूके) ने प्रस्तुत कृति का विमोचन /लोकार्पण करके धर्म प्रभावना में विशेष योगदान दिया ।

अन्त में, पुस्तक के प्रस्तुत संस्करण के प्रकाशन में सोत्साह आर्थिक योगदान करने वाले साधर्मियों ने तथा नि:स्वार्थभाव से सम्पूर्ण वित्त-व्यवस्था सम्हालने वाले शैलेन्द्रजी जैन, सत्येन्द्र जी जैन, नवीन जी सिंघई एवं श्रीमती चेतना जैन ने प्रशंसनीय कार्य किया।

पंचकल्याणक एवं अष्ट मंगल द्रव्य के प्रसिद्ध चित्र साभार ग्रहण किये।

एतदर्थ उपर्युक्त सभी का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से अत्यन्त आभार व्यक्त करते हुए इस विश्वास के साथ यह **गीत-कुसुम** आप सबके कर कमलों में समर्पित है कि यह कृति बच्चों को विशेष रुचि एवं उत्साह के साथ जैनधर्म सीखने, समझने तथा उसका अनुसरण करने के लिए प्रेरित करेगी।

– अशोक जैन, शास्त्री

प्राक्कथन



आओ भाई, मिलकर गायें,
गाते-गाते प्रभु को ध्यायें।
जिनवर के गुण गाते-गाते,
हम भी जिन-सम निज सुख पायें ॥
नमन करें हम पंचप्रभु को,
नवदेवों की पूजा रचायें।
जिनवाणी की विनय, भक्ति और
स्वाध्याय से स्वाश्रय पायें ॥
सदाचार और तत्त्वज्ञान से,
अपना जीवन सुखद बनायें।
पुण्य-कथाएँ गाते-गाते,
पाप त्याग, वैराग्य जगायें ॥
धर्म और साधर्मी के प्रति,
वात्सल्य का भाव बढ़ायें।
निर्ग्रन्थों के पथ पर चलकर,
ग्रन्थ रहित हो, शिव-पद पायें ॥
जिनवाणीरूपी चक्षु से,
सकल विश्व को लख हर्षायें।
जीवन की हर दुविधा को भी,
जिनवचनों से ही सुलझायें ॥
पशु-पक्षी और सकल सृष्टि से,
निजहित की ही शिक्षा पायें।
स्वस्थ रहे तन-मन, निज जीवन,
शाश्वत स्वास्थ्य मोक्ष में पायें ॥
बालगीत सब प्रेरित करते,
बालबुद्धि तज, शुचिता पायें।
जिनवर के चरणों में विकसित,
गीत-कुसुम से जग महकायें ॥

विषय-सूची :

	गीत	पृष्ठ क्र.
✻	मनोगत	4
✻	प्राक्कथन	5
✻	स्वाध्याय नित करना	8
शिशु वर्ग – 1 (आयु- 3 से 4 वर्ष)		
1.	नमन	9
2.	महामंत्र-महिमा	9
3.	चार मंगल	10
4.	पंच प्रभु	11
5.	जिनवाणी-वंदना	11
6.	जिनमन्दिर	12
7.	जय जिनेन्द्र	12
8.	एक मुनिराज	13
9.	मोक्ष में बस	14
10.	मंत्र-पद	14
11.	पर्व है आया	15
12.	तितली	16
13.	चिड़िया	16
14.	सीख	17
15.	अष्ट मंगल द्रव्य	17
यह भी पढ़ें : ✻	हाथी आया	18
शिशु वर्ग – 2 (आयु 4 से 5 वर्ष)		
1.	पंच प्रभु-वंदना	19
2.	सिद्ध प्रभु	19
3.	महावीर जयगान	20
4.	जैनी की पहचान	20
5.	गिनती	21
6.	मछली रानी	21
7.	ज्योतिष लोक	22
8.	पाप	22
9.	झरना	23
10.	चार कषायें	23
11.	गाय	24
12.	दर्पण	24
13.	बारिश आयी	25
14.	त्यागी सियार	26
15.	पंच कल्याणक	27
यह भी पढ़ें : ✻	शाकाहार	28
✻	जानो सात तत्त्व	28
शिशु वर्ग – 3 (आयु 5 से 6 वर्ष)		
1.	नवदेव-स्तवन	29
2.	एक चिड़िया	29
3.	समवशरण	30
4.	चार गतियाँ	30
5	जीव-अजीव	31
6.	आठ मद	32
7.	चंदा मामा	32
8.	आकार	33
9.	बारह भावना (नाम)	33
10.	मोटूराम	34
11.	मोर हमारा	35
12.	छना पानी	36
13.	पतंग	37
14.	अकलंक-निकलंक	38
15.	सम्यग्दर्शन के आठ अंग (नाम)	39
यह भी पढ़ें : ✻	केला	39
बाल वर्ग – 1 (आयु 6 से 7 वर्ष)		
1.	प्रार्थना (हे वीतराग)	40
2.	स्तवन की महिमा	40
3.	अष्ट प्रातिहार्य	41
4.	देवदर्शन	41
5.	सात तत्त्व	42
6.	प्रेरणा	42
7.	विवेकी हंस	43
8.	हे मुनिवर	44
9.	अ से अः	45
10.	बोधिवृक्ष	45
11.	पुरुषार्थी सिंह	46
यह भी पढ़ें : ✻	अखरोट	47
✻	नन्हा-सा दीपक	47
बाल वर्ग – 2 (आयु 7 से 8 वर्ष)		
1.	प्रार्थना (सुबह-सुबह)	48
2.	सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि	48
3.	अरहंत परमेष्ठी	49
4.	सिद्ध परमेष्ठी	49
5.	भावना	50
6.	कषाय	50
7.	छह द्रव्य	51
8.	तोता बोला	51
9.	प्रकृति की सीख	52

विषय-सूची :

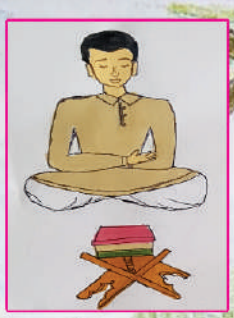
	गीत	पृष्ठ क्र.
10.	श्रावक के अष्ट मूलगुण	52
11.	जिनभक्त मेंढक	53
यह भी पढ़ें : ✲	आँवला	54
✲	दैनिक चर्या	54
बाल वर्ग-3 (आयु 8 से 9 वर्ष)		
1.	प्रार्थना (हे प्रभु तुमने)	55
2.	पंच परमेष्ठी	55
3.	आचार्य परमेष्ठी	56
4.	उपाध्याय परमेष्ठी	56
5.	साधु परमेष्ठी	57
6.	श्रावक के छह आवश्यक	57
7.	पानी की बूँद	58
8.	जिनप्रतिमा	58
9.	मानस्तम्भ	59
10.	दिनचर्या	60
11.	विनयवान ग्वाला	61
यह भी पढ़ें : ✲	आम	62
बाल वर्ग -4 (आयु - 9 से 10 वर्ष)		
1.	सरस्वती-वंदना	63
2.	मुमुक्षु	64
3.	जैन-ध्वज	65
4.	कोयल रानी	66
5.	रात्रिभोजन तज दो	67
6.	अभिवादन	68
7.	मुनि-वंदना	69
8.	आलू कहता	70
9.	शिवमग न्यारा	71
10.	चेतो चेतन	72
11.	कुत्ता बना देव	73
यह भी पढ़ें : ✲	धर्म-प्रभावना	74
✲	सूखे मेवे	74
✲	जिनवाणी माँ कुछ कहना चाहती है ...	75
बाल वर्ग -5 (आयु 10 से 11 वर्ष)		
1.	वीरप्रभु-वंदना	76
2.	मंगल	77
3.	आत्मनिर्भरता	78
4.	जीवन-मंत्र	79
5.	मोहजयी श्रेणिक	80

	गीत	पृष्ठ क्र.
यह भी पढ़ें : ✲	स्वाध्याय की प्रेरणा	81
✲	पेट नहीं है कूड़ादान	82
बाल वर्ग -6 (आयु 11 से 12 वर्ष)		
1.	मूलमंत्र की महिमा	83
2.	ज्ञानार्जन मंत्र	84
3.	परिधान	85
4.	पाप सब त्यागो	86
5.	एक कहानी	87
यह भी पढ़ें : ✲	दूध	88
✲	हरी सब्जियाँ	88
बाल वर्ग -7 (आयु 12 से 13 वर्ष)		
1.	शास्त्राभ्यास की महिमा	89
2.	अणुव्रत पालो	90
3.	शास्त्राभ्यास-प्रयोजन	91
4.	स्वच्छता का मंत्र	91
5.	अनुशासन	92
यह भी पढ़ें :- ✲	खान-पान विवेक	92
बाल वर्ग -8 (आयु - 13 से 14 वर्ष)		
1.	जिज्ञासात्मक प्रार्थना	93
2.	सम्यग्दर्शन के आठ अंग	94
3.	टी.वी.	95
4.	सप्त व्यसन	96
यह भी पढ़ें : ✲	स्वास्थ्य	97
जागरण गीत एवं लोरी		
1.	उठो आत्मन्	98
2.	सो जा मेरे वीर	99
3.	चेतन चेतन (लोरी)	100
4.	जिनवाणी की लोरी	101
सामूहिक गीत		
1.	शिक्षण-शिविर में आओ	102
2.	चलो चलें हम पाठशाला	103
परिशिष्ट :		
1.	संवेग भावना	104
2.	आत्मनिर्भर भारत	104



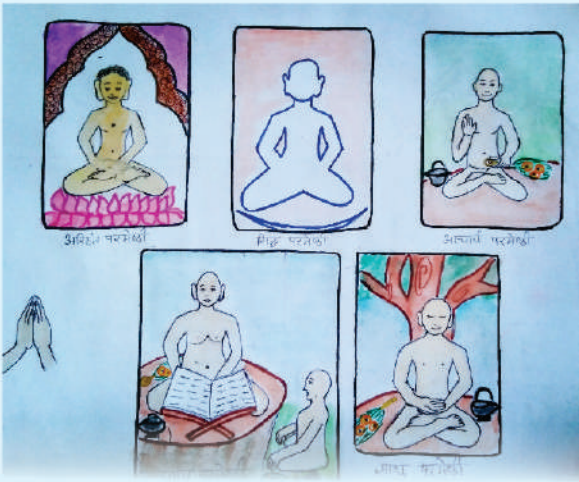
स्वाध्याय नित करना

सभी वाणियों में अति न्यारी,
होती है जिनवाणी।
हर शंका का समाधान,
कर देती है जिनवाणी॥
जिनवाणी सुनकर भव्यों को,
शाश्वत सुख मिलता है।
जिनवाणी की विनय-भक्ति से,
ज्ञान-कमल खिलता है॥
जिनवाणी में रमने से ही,
मोह-वमन हो जाता।
समता-संयम अरु विराग,
सब स्वाध्याय से आता॥
ज्ञान, वचन और शास्त्ररूप में,
जिनवाणी होती है।
भाषा का कोई पक्ष नहीं,
हर भाषामय होती है॥
जिनवाणीरूपी चक्षु से,
स्व-पर तत्त्व को लखना।
स्वानुभूति से शिवसुख पाने,
स्वाध्याय नित करना॥





1. नमन

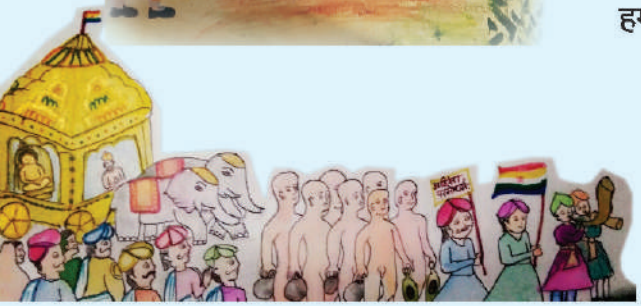


नमन अरहंतों को,
नमन सब सिद्धों को।
नमन आचार्यों को,
नमन उपाध्यायों को।
नमन मुनिराजों को,
नमन पाँचों प्रभु को।
ध्याऊँ पाँचों प्रभु को,
ध्याऊँ निज आतम को।



2. महामंत्र महिमा

णमोकार महामंत्र की महिमा,
तीनलोक में व्याप रही।
ओंकार से, मंत्र-जाप से,
पाप-प्रकृतियाँ काँप रहीं॥
सब मंगल में प्रथम सुमंगल,
मुक्तिमार्ग पाथेय कहा।
अंजन-सा बन गया निरंजन,
हम भी पायें मोक्ष अहा !





3.चार मंगल

अरहंत प्रभु मंगल हैं,
श्री सिद्ध प्रभु मंगल हैं।
श्री साधु सदा मंगल हैं,
जिनधर्म सदा मंगल है।
सारे जग में खोज लिया,
बस, चार सदा मंगल हैं।

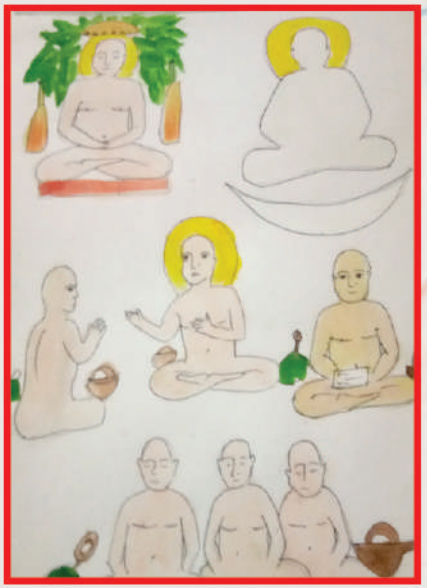
चार उत्तम

अरहंत प्रभु उत्तम हैं,
श्री सिद्ध प्रभु उत्तम हैं।
श्री साधु सदा उत्तम हैं,
जिनधर्म सदा उत्तम है।
सारे जग में खोज लिया,
बस, चार सदा उत्तम हैं।



चार शरण

अरहंत शरण में जाऊँ,
श्री सिद्ध शरण में जाऊँ।
श्री साधु शरण में जाऊँ,
जिनधर्म शरण में जाऊँ।
सारे जग में खोज लिया,
बस, चार शरण ही पाऊँ॥



4.पंच प्रभु

अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय,
साधु परमेष्ठी सुखकार।
शुद्धातम प्रतिपल दर्शाते,
पंच प्रभु की जय–जयकार॥

5.जिनवाणी–वंदना



हे जिनवाणी माँ ! हमारा,
वंदन नित स्वीकार करो।
हम नन्हे–मुन्ने बच्चों को,
ज्ञान–विनय–सुख से भर दो॥





6.जिनमन्दिर

जिनमन्दिर जिन–समवशरण–सम,
जिसकी महिमा अपरम्पार।
गंधकुटी में नाथ विराजे,
सुर–नर–नारी करें जयकार॥

7.जय जिनेन्द्र

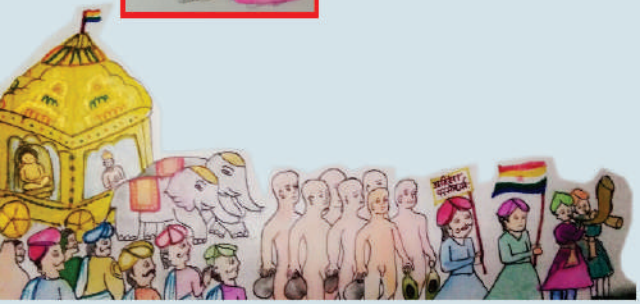


दादा बोले – जय जिनेन्द्र,
दादी बोली – जय जिनेन्द्र।
पापा बोले – जय जिनेन्द्र,
मम्मी बोली – जय जिनेन्द्र।
भैया बोला – जय जिनेन्द्र,
दीदी बोली – जय जिनेन्द्र।
पाठशाला में राग–द्वेष तज,
सब मिल बोले – जय जिनेन्द्र।
हम भी बोलें – जय जिनेन्द्र,
तुम भी बोलो – जय जिनेन्द्र।

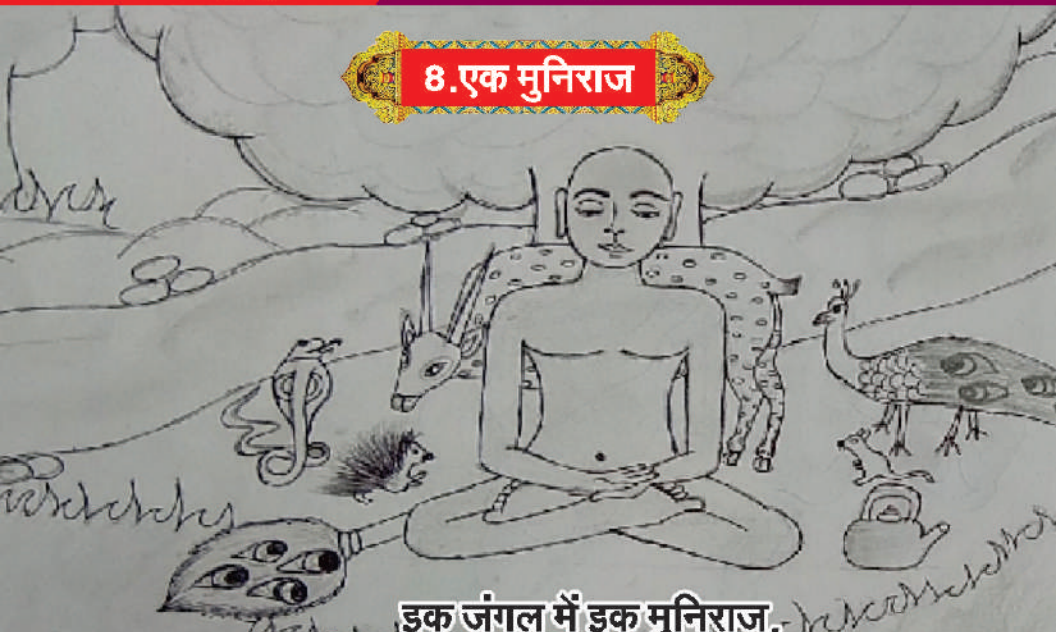








8.एक मुनिराज



इक जंगल में इक मुनिराज,
वीतराग–विज्ञान से साज।
एक वृक्ष के तल में विराज,
ध्याते थे निज चेतनराज।
शान्ति का सर्वत्र था राज,
पशु–पक्षी आ गये विराज।
नकुल, सर्प, मृग और मृगराज,
शत्रु–मित्र, नर–देव समाज।
बैर–भाव तज, वहाँ विराज,
सबको था मुनिवर पर नाज।
मैं भी उनको वंदूँ आज,
उन–सम पाऊँ शिवपुर राज।





9.मोक्ष में बस

एक, दो – मुनिव्रत लो।
तीन, चार – कर तत्त्वविचार।
पाँच, छह – निज में रह।
सात, आठ – नाशो कर्म आठ।
नौ, दस – मोक्ष में बस।



10.मंत्र पद

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा,
परमेष्ठी पद वाचक हैं।
जो भी इनका ध्यान लगाता,
सुख–सम्पत्ति वह पावत है॥



11.पर्व है आया

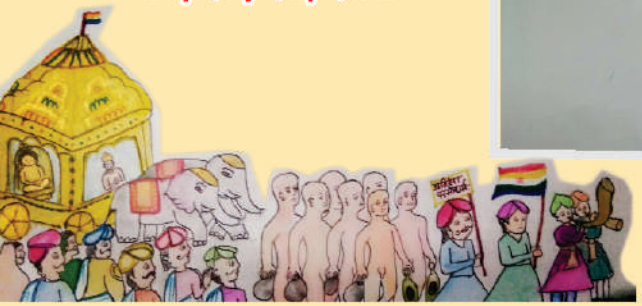
पर्व है आया, पर्व है आया।
दशलक्षण महापर्व है आया॥
धर्म के लक्षण कितने ?
एक, दो, तीन।

पर्व है आया, पर्व है आया।
दशलक्षण महापर्व है आया॥
धर्म के लक्षण कितने ?
चार, पाँच, छह।

पर्व है आया, पर्व है आया।
दशलक्षण महापर्व है आया॥
धर्म के लक्षण कितने ?
सात, आठ, नौ।

पर्व है आया, पर्व है आया।
दशलक्षण महापर्व है आया॥
धर्म के लक्षण कितने ?
दस, दस, दस,
बस, दस, दस, दस॥







12. तितली

तितली रानी, बड़ी सयानी,
फूल–फूल पर जाती है।
फूल कभी न तोड़ो तुम,
बच्चो ! तुम्हें सिखाती है ॥
फूल में जीव असंख्य हैं रहते ,
जीवदया को पालो तुम।
पर्यावरण सँवारो तुम,
उसका घर भी न छीनो तुम ॥

13.चिड़िया

चिड़िया चहक–चहक कर गाती,
मानो प्रभु के भजन सुनाती।
सूर्य ढले दाना न खाती,
संतों जैसा ध्यान लगाती।
सुबह उठे नभ में उड़ जाती,
मानो मुक्तिपुरी को जाती।

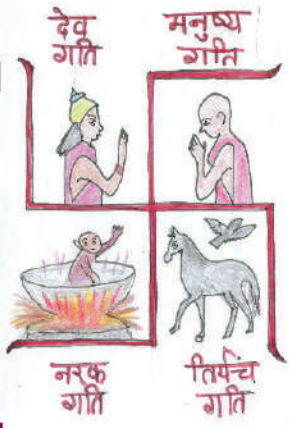




14.सीख



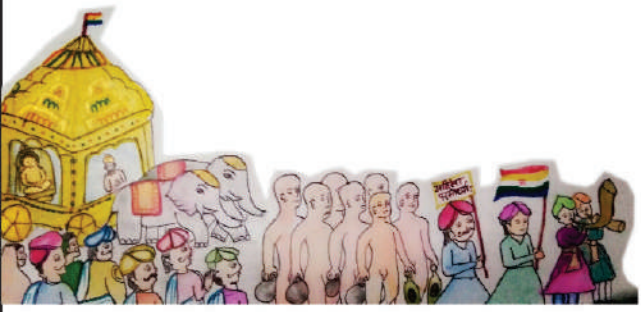
सीधी रेखा कहे कि सीधे,
खड़े–खड़े कर पूजन–ध्यान।
तिरछे भाव कभी न लाना,
तुम हो सरल भाव की खान॥
आतम–परमातम को ध्याओ,
न खा चक्कर चहुँगति जान।
आत्मध्यान कर सीधे जाओ,
मुक्तिपुरी, लो सुख अम्लान॥



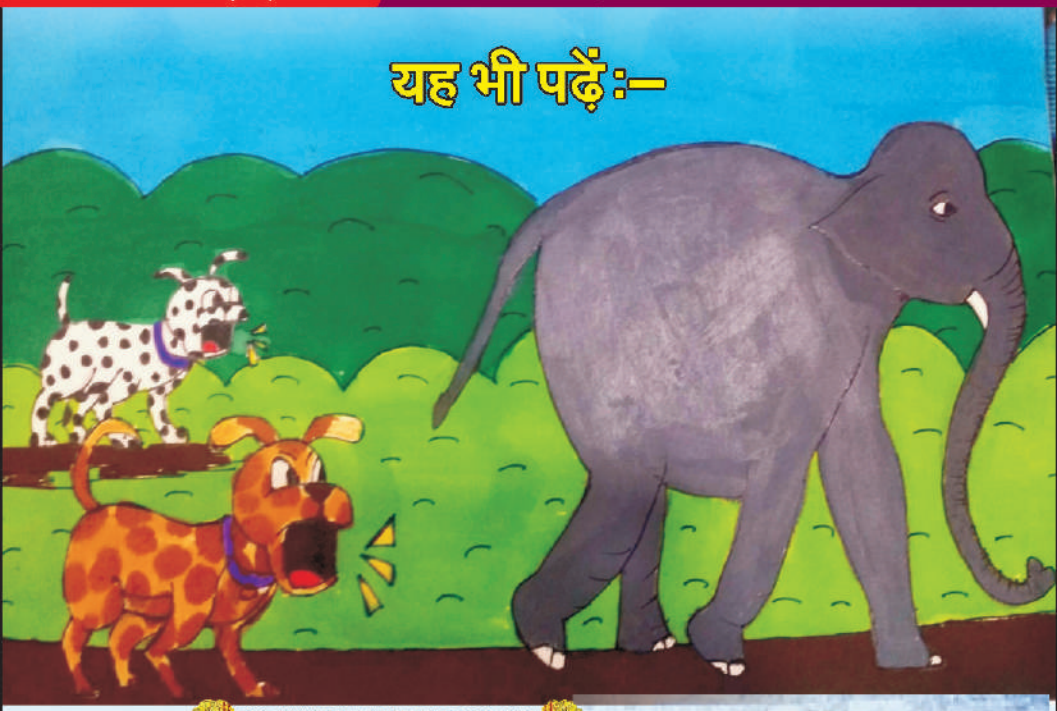
15. अष्ट मंगल द्रव्य

दर्पण, कलश, ध्वजा और ठोना,
छत्र, चमर, झारी, बीजना।
ये सब हैं अष्ट मंगल द्रव्य,
जिनप्रतिमा संग दिखते भव्य॥





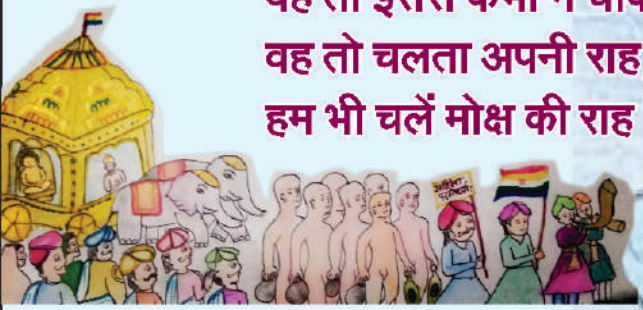
यह भी पढ़ें :–



हाथी आया

हाथी आया, हाथी आया,
अति बलशाली हाथी आया।
शाकाहारी हाथी आया,
शान्त–स्वभावी हाथी आया॥

उसके पीछे कुत्ते भौंकें,
वह तो इससे कभी न चौंके।
वह तो चलता अपनी राह,
हम भी चलें मोक्ष की राह॥



1. पंच प्रभु–वंदना



अरहंतों को करें प्रणाम,
सिद्धों–सा ध्या आतमराम।
आचार्य, उपाध्याय, साधु–सम,
बनकर पायें मुक्तिधाम।
पंच प्रभु को करें प्रणाम,
पंच प्रभु–सा करेंगे काम।

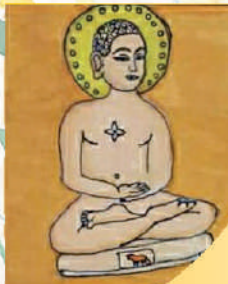
2. सिद्ध प्रभु

अष्ट कर्म को नष्ट किया,
अष्ट गुणों को प्रकट किया।
सिद्धालय में सदा हैं रहते,
सिद्ध प्रभु उनको हैं कहते।
शुद्धातम हमको दिखलाते,
मुक्तिपुरी से कभी न आते।
आओ, उनको करें नमन,
निजानन्द में रहें मगन।

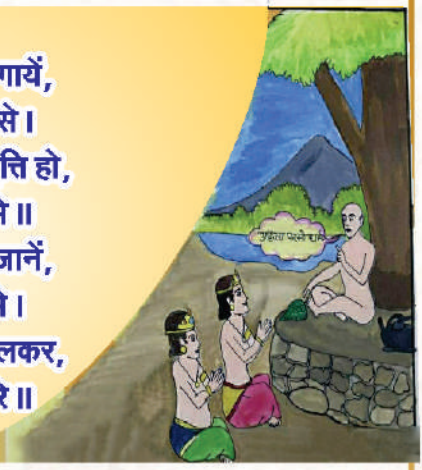




3. महावीर जयगान



महावीर प्रभु के गुण गायें,
हर्षित हों यशगान से।
विश्वशान्ति हो, सद्वृत्ति हो,
महावीर जयगान से॥
अनेकान्तमय वस्तु जानें,
महावीर उपदेश से।
महावीर के पथ पर चलकर,
बनें स्वयं महावीर रे॥



4. जैनी की पहचान

पानी सदा छानकर पीता,
रात्रिभोजन कभी न करता।
जिनदर्शन से निज–सुख पीता,
संयम और समता से जीता॥
जो भी ऐसा जीवन जीता,
वह जैनी श्रावक कहलाता।
जैनी गौरवपूर्वक जीता,
जिन–आज्ञा का पालन करता॥







5. गिनती



एक, दो, तीन, चार,
जिनवच सुन, कर तत्त्वविचार।
पाँच, छह, सात, आठ,
समकित सहित धरो गुण आठ।
इसके आगे नौ और दस,
मुनि बन, निज ध्या, मोक्ष में बस।

6. मछली रानी

मछली रानी, बड़ी सुहानी,
मत डर मुझसे जल की रानी।
नहीं करुँगा मैं शैतानी,
मैं हूँ शाकाहारी प्राणी॥

तैराकी सीखूँगा तुमसे,
तेरे संग खेलूँगा रानी।
हम दोनों मिलकर हे रानी !
जग में अहिंसा भरेंगे रानी॥



7. ज्योतिष-लोक

चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारे,
नील गगन में लगते प्यारे।
जगमग करते सारा लोक,
कहते उसे ज्योतिषी लोक।
मेरु-प्रदक्षिणा नित्य लगाते,
जिनभक्ति में चित्त रमाते।
हम भी करें सदा जिनभक्ति,
जिससे मिलती दुख से मुक्ति।



8. पाप









हिंसा, झूठ, चोरी,
कुशील, परिग्रह।
पाँच पाप जानो,
ये दुर्गति के गृह॥
दुख का जो कारण,
बुरा कार्य वह।
पाप उसे जानो,
जिनवचन रहे कह॥
पाप भाव करके,
संसार-दुख न सह।
पाप सभी त्यागो,
सुख धर्म से तू लह॥





9. झरना

झर–झर करता झरना झरता,
झरते–झरते हमसे कहता –2
जिनदर्शन कर निजदर्शन पा,
पाप झड़ा, सब कर्म झड़ाओ।
निज आतम आनन्द का झरना,
निजानन्द में नित्य नहाओ।



10. चार कषायें

क्रोध कहें गुस्सा को, भाई !
मान घमण्ड को कहते हैं।
माया छल–कपट कहलाती,
लोभ लालच को कहते हैं ॥

चार कषायें हैं दुखदायी,
आतम को ये कसती हैं।
इन्हें त्याग देते जो प्राणी,
सुख अनन्त वे लहते हैं ॥







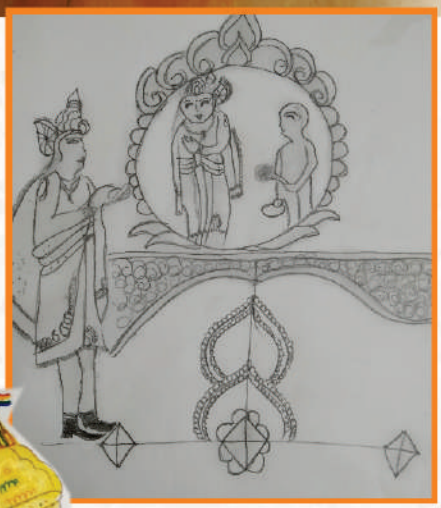


11.गाय

सरल-स्वभावी, प्यारी गाय,
सीधी-साधी, न्यारी गाय।
माता-सम होती है गाय,
उपकारी होती है गाय ॥

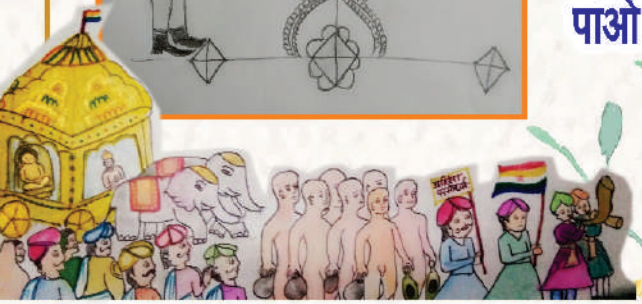
घास-फूस खाती है गाय,
मधुर दूध देती है गाय।
औषधि जैसा दूध जो पाय,
शक्तिशाली वह हो जाय ॥

गुरु जी का संकेत जो पाय,
शिक्षा-मर्म अधिक पा जाय।
वह विद्यार्थी अधिक फल पाय,
गाय-समान श्रोता कहलाय ॥



12.दर्पण

ज्यों दर्पण तन-रूप दिखाता,
प्रभु दिखाते चेतन-रूप।
प्रभु-समान निजरूप देखकर,
पाओ ज्ञानानन्द-रस कूप ॥

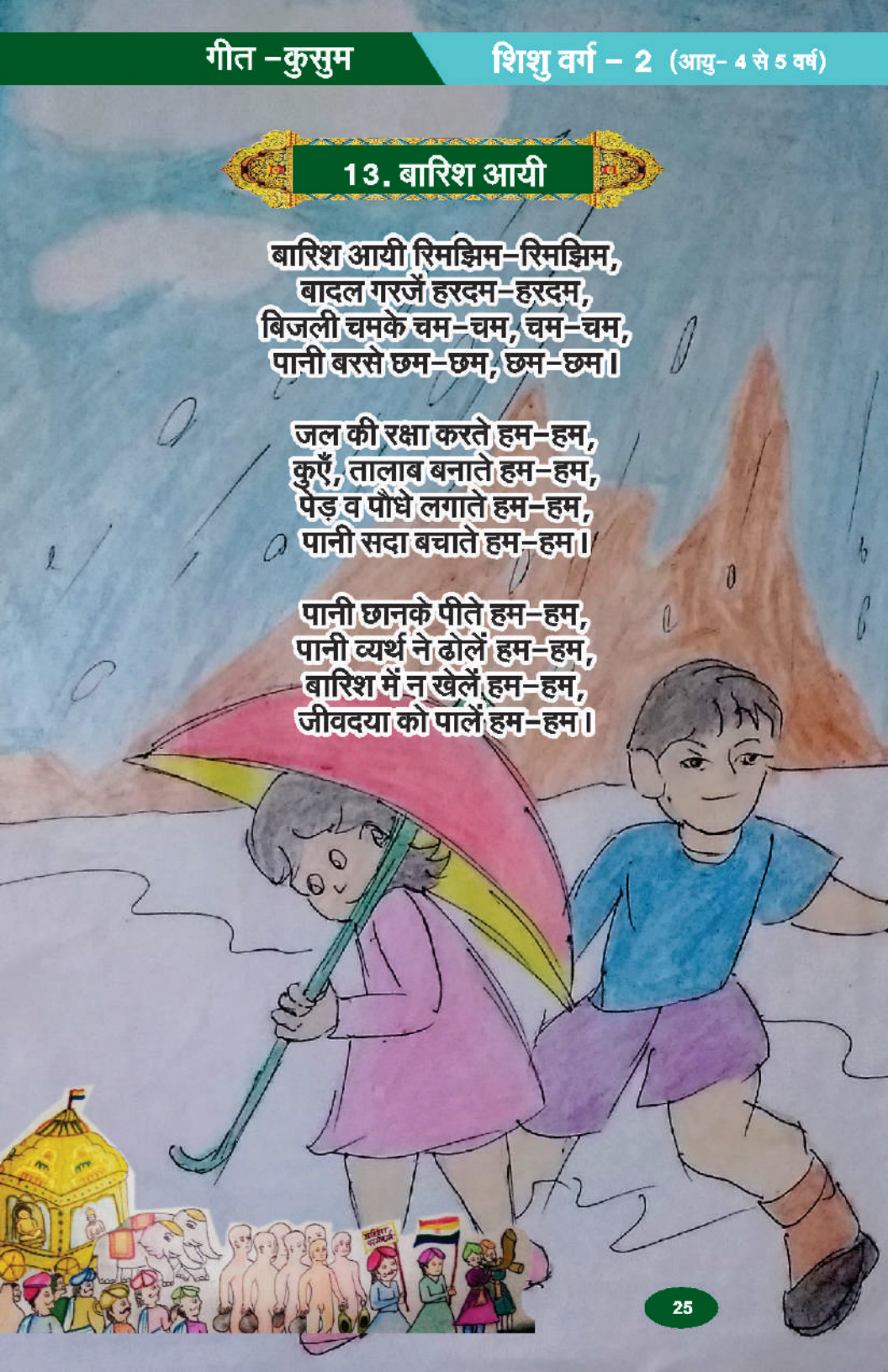


13. बारिश आयी

बारिश आयी रिमझिम–रिमझिम,
बादल गरजें हरदम–हरदम,
बिजली चमके चम–चम, चम–चम,
पानी बरसे छम–छम, छम–छम।

जल की रक्षा करते हम–हम,
कुएँ, तालाब बनाते हम–हम,
पेड़ व पौधे लगाते हम–हम,
पानी सदा बचाते हम–हम।

पानी छानके पीते हम–हम,
पानी व्यर्थ ने ढोलें हम–हम,
बारिश में न खेलें हम–हम,
जीवदया को पालें हम–हम।



14. त्यागी सियार

एक सियार प्यासा था,
रात्रिभोजन त्यागी था।
जंगल–जंगल घूमता था,
पानी ढूँढ़ा करता था।

उसे दिखी एक बावड़ी,
उसमें पानी थोड़ा था।
बावड़ी में सीड़ियाँ थीं,
जल पीने की इच्छा थी।

सियार उतर गया नीचे,
अंधकार था नीचे।
बिना पिये वह पानी,
ऊपर आया ज्ञानी।

बाहर खूब उजेला था
अंदर घुप्प अंधेरा था।
दृढ़प्रतिज्ञ, विवेकी सियार,
मुनि–वच का करता सत्कार।

पानी से नहीं प्रीति धरी,
समता से निज देह तजी।
देवगति में पहुँचा सियार,
दृढ़–व्रत का समझो यह सार।
रात्रि–भोज नहीं करना,
मोक्षमार्ग में नित बढ़ना।



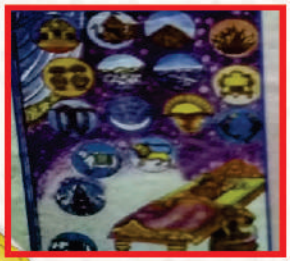


15. पंच कल्याणक

गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, मोक्ष को,
पंच कल्याणक कहते हैं।
तीर्थंकर के कल्याणक,
सम्यक् श्रद्धान जगाते हैं ॥
आओ, मनायें पंचकल्याणक,
मोह नाशकर सुख पायें।
हम भी ऐसे काम करें,
कल्याणक अपने हो जायें ॥

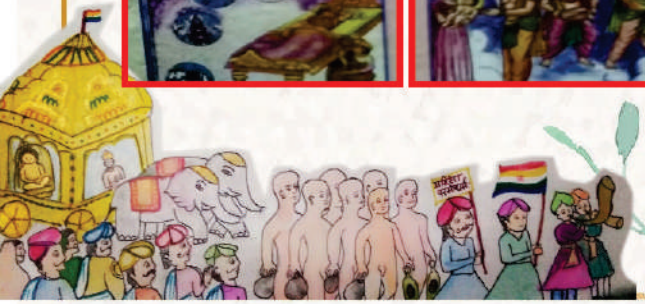












यह भी पढ़ें :–

शाकाहार



मानो लौकी, ककड़ी बोले,
मुझको खा लो, मुझको खा लो।
आम, सेव, केला भी बोले,
मुझको खा लो, मुझको खा लो।
गेहूँ, चावल, दालें बोलीं,
मुझको खा लो, मुझको खा लो।

सब्जी, फल, अनाज सब बोले,
हमको खा, तन स्वस्थ बना लो।



अण्डा, मछली, मुर्गी बोले,
हम हैं जीव, हमें मत खाओ।
सभी जीव कहते हैं, बच्चो !
हमें न खाओ, हमें न खाओ।

माँसाहार को दूर भगाओ,
शाकाहार सदा अपनाओ।

जानो सात तत्त्व



जीव–अजीव तत्त्व पहचानो।
आस्रव–बंध हेय तुम जानो।
संवर–निर्जरा शिवमग जानो।
मोक्ष परम आनन्दमय मानो।
इनको सात तत्त्व तुम जानो।
उपादेय, हेय, ज्ञेय, पिछानो।



1. नवदेव–स्तवन



हे नवदेव ! करो कल्याण,
पाऊँ ज्ञानानन्द की खान।
अरहंत और सिद्ध भगवान,
आचार्य, उपाध्याय, साधु महान ॥
जिनवाणी, जिनधर्म प्रधान,
जिनमन्दिर, जिनप्रतिमा जान।
ये नवदेव करें कल्याण,
पूजूँ, ध्याऊँ, करुँ गुणगान ॥

2. एक चिड़िया



एक चिड़िया की चोंच है एक,
पर से भिन्न, निजातम देख।

दो पंख और आँखें दो,
जिनदर्शन कर, निज–सुख लो।

दो पैर, पर दिल है एक,
सुख पाने का मार्ग है एक।

चिड़िया उड़ती नभ की ओर,
हम भी चलें मुक्ति की ओर।



3. समवशरण



समवशरण में चार द्वार हैं,
चार द्वार पर मानस्तम्भ।
गंधकुटी में नाथ विराजे,
जिनभक्ति में मत कर दम्भ॥
तीर्थंकर की वाणी सुनते,
मुनि, सुर, पशु और श्रावकवृन्द।
जिनध्वनि सुन, निज आश्रय करते,
शिव–सुख पाते बिना विलम्ब॥

4.चार गतियाँ (सोरठा)

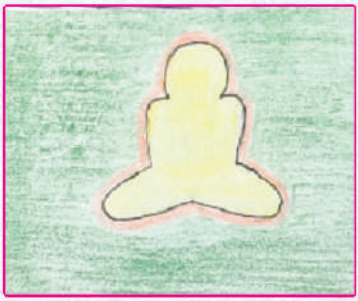
मनुष्य और तिर्यंच,
नरकगति और देवगति।
चारों गतियाँ दुखमय,
सुखमय है पंचमगति॥



बिना भेदविज्ञान,
जीव भ्रमें संसार में।
जो जाने शुद्धात्म,
वह पाता सुख मोक्ष में॥



5.जीव–अजीव



जो जानता और देखता है,
जीव उसको जानना।
जो जानता न देखता,
अजीव उसको मानना॥

पशु और पक्षी, हम और तुम,
तो जीव हैं यह जानना।
पुस्तक, खिलौने, देह आदि,
अजीव हैं यह मानना॥



अजीव से जो भिन्न है,
वह जीव तो मैं स्वयं हूँ।
धन, सम्पदा और देह से,
मैं तो सदा ही भिन्न हूँ॥



निज जीव को ही जानकर,
सुख प्राप्त कर सकता हूँ मैं।
निज आत्मा में लीन हो,
भगवान बन सकता हूँ मैं॥





6. आठ मद (सोरठा)

ज्ञान, पूजा, कुल, जाति,
तप, शरीर, बल, ऋद्धि लह।
इनका करता मान,
आठ मदों से युक्त वह॥
जो न करता मान,
मार्दव धर्म से युक्त वह।
मान रहित मुनिराज,
बतलाते हैं बात यह॥

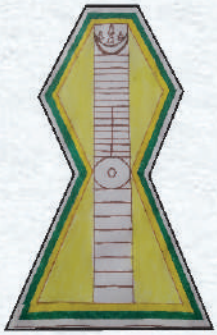


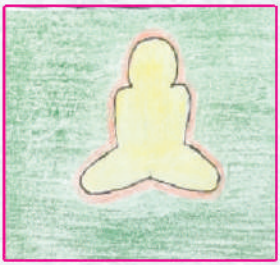
7. चंदा मामा

चंदा मामा, प्यारे मामा,
मेरे घर भी आओ ना।
तेरे अंदर है जिनमन्दिर,
उसके दर्श कराओ ना॥
इक दिन मुझको गोदी लेकर,
मेरु परिक्रमा कराओ ना॥
मेरु के अंदर जिनमन्दिर,
उनके दर्श कराओ ना।
पूजन कर, निज को लख कर मैं!
सिद्धों–सा सुख पाऊँगा।
मुक्ति–सुख पाकर हे मामा!
फिर न भव–दुख पाऊँगा॥



8.आकार





जम्बूद्वीप है थाली जैसा,
अन्य द्वीप चूड़ी आकार।
सिद्धशिला है अर्द्धचन्द्र-सम,
सिद्धप्रभु हैं पुरुषाकार॥
संसारी जीवों का जानो,
प्राप्त-देह जितना आकार।
तीन लोक व छह द्रव्यों का,
आगमकथित नियत आकार॥





9.बारह भावना (नाम)



अनित्य, अशरण और संसार,
एकत्व, अन्यत्व, अशुचि विचार।
आस्रव, संवर, निर्जरा, लोक,
बोधिदुर्लभ, धर्म अवलोक।
बारह भावना जो भी भाता,
ज्ञान, विराग, सहज सुख पाता।





10.मोटूराम

मोटूराम, मोटूराम,
करते रहते बस आराम।
खाते–पीते सुबह–शाम,
करते नहीं दूसरा काम।
मनचाहा वह करते काम,
दिनचर्या बिन नित विश्राम।
उनका तन रोगों का धाम,
न जपते वे प्रभु का नाम।
पाप–बंध करते अविराम,
दुर्गति में वे गिरे धड़ाम।
बच्चो ! करो न ऐसा काम,
धर्म धार, लो सुख अभिराम।



11.मोर हमारा



मोर हमारा सबसे न्यारा,
बड़ा ही सुन्दर प्यारा–प्यारा।
केकी ध्वनि करता है प्यारी,
विषधर को लगती दुखकारी॥

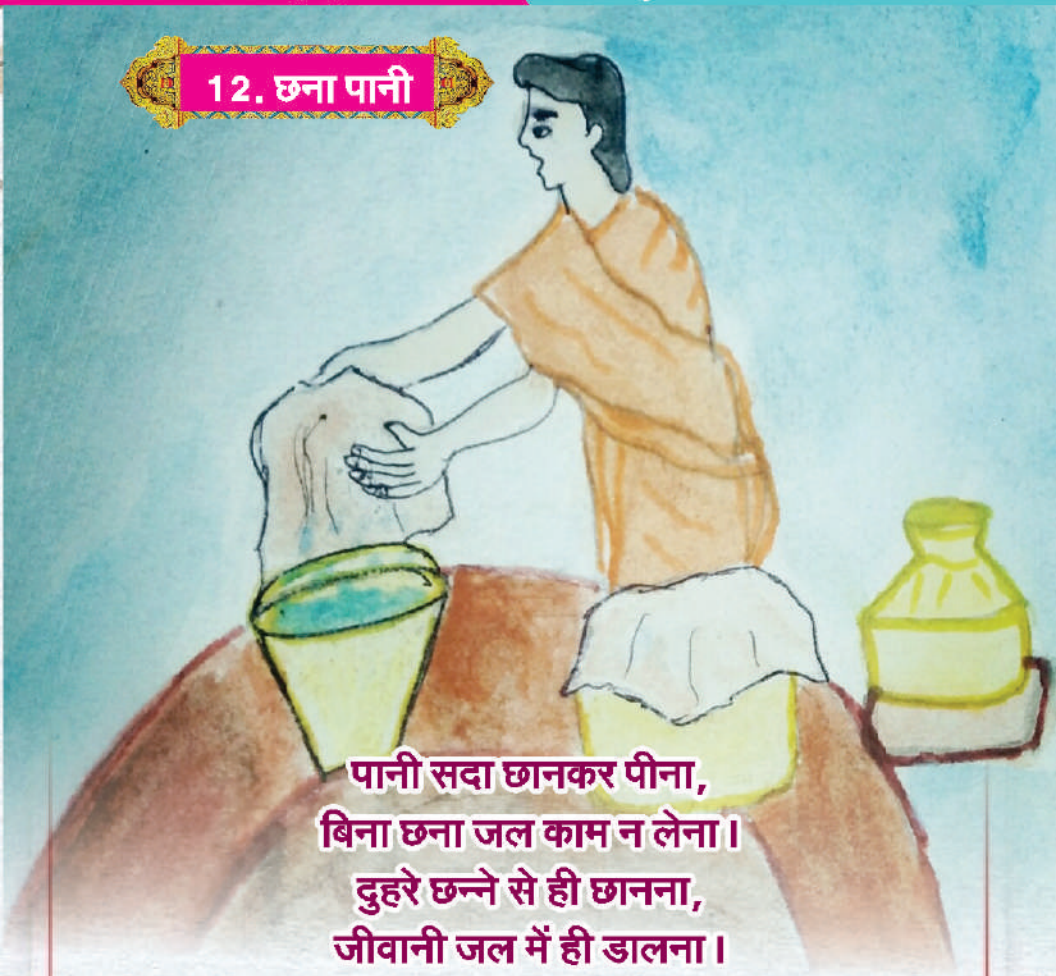
काले बादल लख हर्षाता,
वह मनमोहक नृत्य दिखाता।
रंग–बिरंगे पर फैलाता,
सबके मन को सुख पहुँचाता॥

मोर के पंख स्वयं जब गिरते,
वनवासी उनको तब चुनते।
उन पंखों से पिछी बनाते,
श्रावकगण मुनिसंघ को देते॥

मोर पंख अति कोमल होते,
उसे साधु संयमहित लेते।
हम भी इक दिन मुनिव्रत धारें,
पिछी से जीव–विराधना टालें॥



12. छना पानी



पानी सदा छानकर पीना,
बिना छना जल काम न लेना।
दुहरे छन्ने से ही छानना,
जीवानी जल में ही डालना।
जीवदया का पालन करना,
पाप–बंध से सदा ही डरना।
शुद्धभाव से प्रभु को भजना,
चिदानन्द पी, शिवसुख वरना।
हम सबको संकल्प है करना,
पानी सदा छानकर पीना।





13.पतंग

रंग–बिरंगी उड़े पतंग,
आसमान में पंछी संग।
बादल भी उड़ते हैं संग,
भर देती जन–जन में उमंग॥
उड़ती माँझा संग पतंग,
माँझा डाले रंग में भंग।
पंछी को करती है तंग,
माँझा काटे उनके अंग॥

समय नष्ट करती है पतंग,
दुर्घटना भी लाती संग।
अतः उड़ाओ नहीं पतंग,
बदलो सुख पाने का ढंग॥

त्योहारों में खुशी मनाओ,
नहीं किसी को दुख पहुँचाओ।
धरती को खुशहाल बनाओ,
जीवदया अपने मन लाओ॥



14. अकलंक–निकलंक

अकलंक–निकलंक थे दो भाई, जैनधर्म की शिक्षा पायी।
जैनध्वजा उनने फहरायी, जग ने उनकी कीर्ति गायी।
निकलंक ने निज प्राण तजे, धर्म–राह से नहीं डिगे।
अकलंक ने तब लिया ये प्रण, धर्म–भावना हो हर क्षण।
जैनधर्म की बढ़ाऊँ शान, न्याय–प्रतिष्ठा करूँ महान।
आत्म साध, की रचना ग्रन्थ, परिग्रह त्याग हुए निर्ग्रन्थ।
जग में जैनधर्म फैलाया, आजीवन ज्ञानानन्द ध्याया।
आओ, हम सब भी प्रण करें,
निज लख, धर्मोन्नति ही करें।



15.सम्यग्दर्शन के आठ अंग (नाम)





निःशंकित, निःकांक्षित,
निर्विचिकित्सा अंग।
अमूढ़दृष्टि, उपगूहन,
स्थितिकरण संग॥
वात्सल्य और प्रभावना,
ये हैं आठों अंग।
सम्यग्दर्शन युक्त धरो,
पाओ परमानन्द॥













यह भी पढ़ें:–

केला

पीला–पीला केला खाओ, केला है सम्पूर्ण आहार।
स्वयं पका केला गुणकारी, कार्बाइड का करे विकार॥
दूध, इलायची लो केला संग, हो जाता है अति गुणकार।
तन को ऊर्जावान बनाता, ठंडक भी देता है अपार॥
हिंसाजनित दवाएँ तज दो,
भोजन–पान अहिंसक लो।
तन–मन स्वस्थ रखो तुम अपना,
धर्मध्यान में चित्त धरो॥



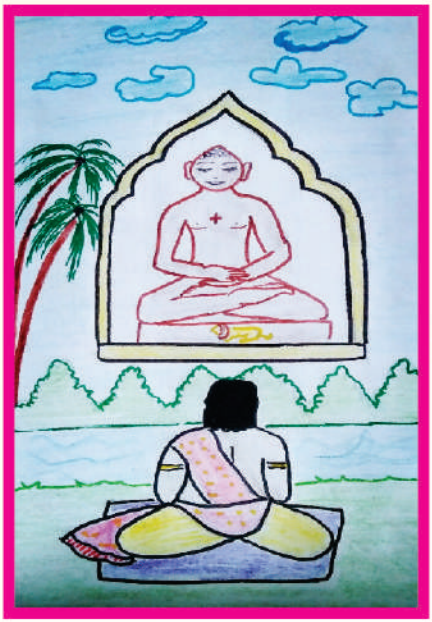


1.प्रार्थना

हे वीतराग, सर्वज्ञ देव !
हम वंदन नित तुमको करते।
भय, लालच व स्वार्थभाव तज,
प्रभु–भक्ति में नित रमते।
हमको दो आशीष कि हम सब,
जिनवाणी का समझें मर्म।
मुनि–सम ज्ञान–विराग प्राप्तकर,
निजानन्द पा, हों निष्कर्म।

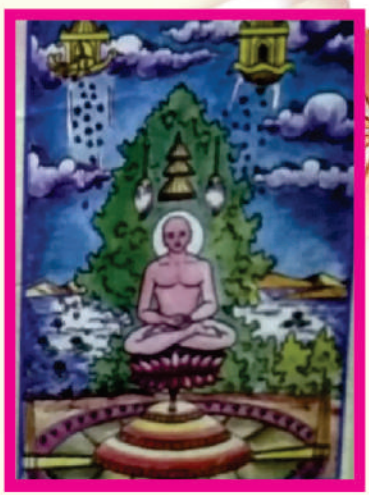
2.स्तवन की महिमा

अरहंतादिक का गुणगान,
उसे कहा स्तवन महान।
पाप–मुक्ति, दे पुण्य महान,
पहुँचाता है शिवपुर–थान॥
स्वर्गादिक जो नहीं चाहता,
न चाहे लौकिक उत्थान।
बिना कामना स्तुति करता,
वह बन जाता है भगवान॥





3.अष्ट प्रातिहार्य



तरु अशोक तल, सिंहासन पर,
तीन छत्र संग जिनवर शोभें।
भामण्डल दुति, चँवर ढुरें जहाँ,
पुष्पवृष्टि, दुन्दुभि मन मोहें॥
सब भाषामय दिव्यध्वनि ही,
भवि जीवों को शिवमग खोले।
आठों प्रातिहार्य युत प्रभु को,
समवशरण में लख भवि डोलें॥

4.देव–दर्शन (लावनी)



प्रातः तन शुद्धिपूर्वक वस्त्र पहनना।
जिनमन्दिर द्वारे हाथ–पैर तुम धोना॥
'निःसही' शब्द कह, जिनमन्दिर में जाना।
जयकार, नमोऽस्तु, प्रभु–सन्मुख हो करना।
णमोकार, भक्ति संग प्रभु को शीश नवाना।
स्तुतिमय प्रभु की तीन प्रदक्षिणा देना॥
ध्या पंच प्रभु, कायोत्सर्ग तुम करना।
फिर स्वाध्याय से वस्तु–स्वरूप समझना॥
जिनदर्शन से निजदर्शन–सुख तुम पाना।
रत्नत्रय पाकर स्वयं प्रभु बन जाना॥



5. सात तत्त्व

जीव, अजीव तत्त्व पहचानो,
आस्रव, बंध हेय तुम जानो।
संवर सहित निर्जरा करना,
मोक्ष–सुख पा, कभी न भ्रमना।
सात तत्त्व ये कहलाते हैं,
जान इन्हें सब सुख पाते हैं।
आओ, करें भेदविज्ञान,
हों विराग, पायें शिवथान।



6.प्रेरणा

जानो चेतन ! जिन–सम तू,
राग–द्वेष हो जायेंगे छू।
जिनमन्दिर में जाना तू,
प्रभु को भज, प्रभु बन जा तू।
स्वाध्याय भी करना तू,
सिद्धों–सा सुख पाना तू।
विनय गुरु की करना तू,
ज्ञान–विराग को पाना तू।
जीवन सफल बनाना तू,
मुक्तिपुरी में जाना तू।







7.विवेकी हंस

सबसे सुन्दर, सबसे प्यारा,
पक्षी–जगत में सबसे न्यारा।
दम्पती को आदर्श है हंस,
प्रेम–प्रतीक सदा है हंस॥

सरोवरों में रहता हंस,
जल के ऊपर तैरता हंस।
शान्तचित्त रहता है हंस,
संतों–सा लगता है हंस॥

नीर–क्षीर विवेकी हंस,
ज्ञानी श्रोता–सा है हंस।
उपादेय व हेय पिछाने,
भेदविज्ञानी जैसा हंस॥

४.हे मुनिवर



हे मुनिवर ! हे मुनिवर ! हे मुनिवर हे !
हे गुरुवर ! हे गुरुवर ! हे गुरुवर हे !
मैं तो फिरा संसार में सुख खोजने,
चहुँगति में सुख न मिला,
आया तव शरण में।

हे मुनिवर ! हे मुनिवर ! हे मुनिवर हे !
हे गुरुवर ! हे गुरुवर ! हे गुरुवर हे !
देख लिया संसार क्षण–भंगुर ही है,
एक ध्रुव आत्मा,
ज्ञान–सुखमयी है।



हे मुनिवर ! हे मुनिवर ! हे मुनिवर हे !
हे गुरुवर ! हे गुरुवर ! हे गुरुवर हे !
शाश्वत आनन्दमय मोक्ष पाने,
दे दो गुरु मुनिधर्म,
आया तव शरण में।
हे मुनिवर ! हे मुनिवर ! हे मुनिवर हे !
हे गुरुवर ! हे गुरुवर ! हे गुरुवर हे !





9.अ से अः



अ – अरहंत को नमन हमारा।
आ – आत्मा है जग से न्यारा॥
इ – इस भव को सार्थक करना।
ई – ईश्वर में श्रद्धा धरना॥
उ – उत्थान धर्म का करना।
ऊ – ऊँची ही भावना रखना॥
ऋ – ऋषियों का समागम करना।
ए – एकत्व–विभक्त में रमना॥
ऐ – ऐसे शिवमग पर चलना।
ओ – ओंकार के सार को पाना॥
औ – औषधि–सम शिवमग जानो।
अं – अंतिम क्षण समता धारो॥
अः – अहा ! आनन्द शाश्वत लो।
तेरह अक्षर से शिक्षा लो॥



10.बोधिवृक्ष

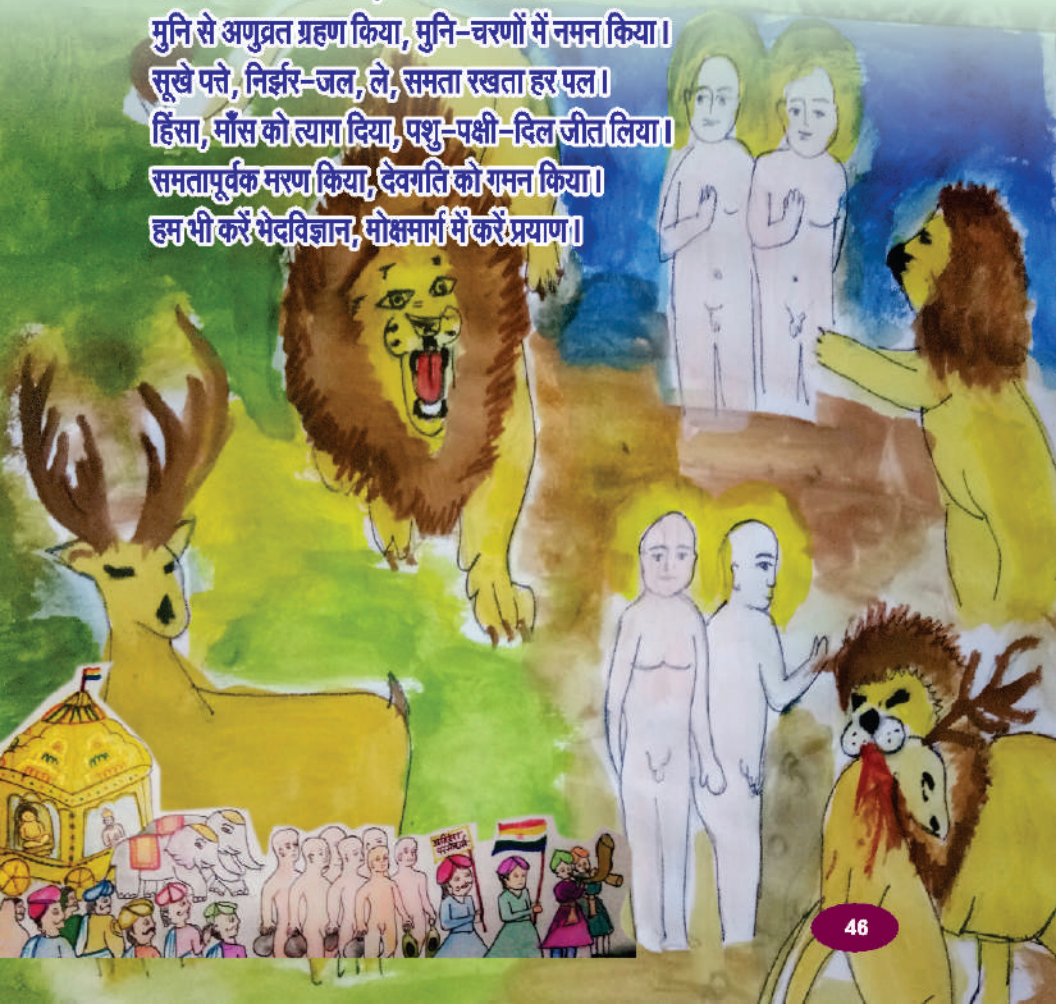


हर बरगद का पेड़ देखकर,
भगवन्तों की याद है आती।
उसके तल में बैठूँ, ध्याऊँ,
स्वसन्मुख–भावना है आती॥
उसके तल में आदिप्रभु ने,
आतम–ध्यान लगाया था।
केवलज्ञान वहाँ पाने से,
बोधिवृक्ष कहलाया था॥



11.पुरुषार्थी सिंह

इक जंगल में था एक शेर, बड़ों-बड़ों को करता ढेर।
एक दिवस उसे हिरण दिखा, उसने उसको पकड़ लिया।
चीर-फाड़ कर खाता था, खाते हुए हर्षाता था।
आये थे वहाँ दो मुनिराज, शांत हुआ लखकर वनराज।
मुनिवर ने उपदेश दिया, भगवान आत्मा बता दिया।
सिंह नहीं, सिद्ध-समान है तू, पाप तजो, निज को लख तू।
सिंह को पश्चात्ताप हुआ, तत्त्वज्ञान पा हर्ष हुआ।
उसने आतमध्यान किया, सम्यग्दर्शन प्राप्त किया।
मुनि से अणुव्रत ग्रहण किया, मुनि-चरणों में नमन किया।
सूखे पत्ते, निर्झर-जल, ले, समता रखता हर पल।
हिंसा, माँस को त्याग दिया, पशु-पक्षी-दिल जीत लिया।
समतापूर्वक मरण किया, देवगति को गमन किया।
हम भी करें भेदविज्ञान, मोक्षमार्ग में करें प्रयाण।



यह भी पढ़ें :–

अखरोट

सर्दी का मौसम जब आये,
सुबह–सुबह खाओ अखरोट।
बुद्धि और स्मृति बढ़ाये,
प्रतिदिन नियमित इक अखरोट॥
हड्डी व स्नायु तंत्र को,
ताकतवर करता अखरोट।
बच्चा हो या बूढ़ा कोई,
सबको बल देता अखरोट।



हिंसाजनित दवाएँ तजकर
भोजन–पान अहिंसक लो।
संयमपूर्वक खान–पान से,
सुखमय निज जीवन जी लो॥

नन्हा–सा दीपक

मैं इक नन्हा–सा दीपक हूँ,
मैं सूर्य नहीं, बस दीपक हूँ।
मैं स्वयं प्रकाशित होकर के,
बस सर्वोदय की भावना से॥
निज देश, जगत के कोने में,
मैं बैठ ज्ञान फैलाऊँगा।
मैं देश–धर्म की उन्नति में,
नन्हा दीपक बन जाऊँगा॥





1.प्रार्थना

सुबह–सुबह लें प्रभु का नाम,
जिनवाणी को करें प्रणाम।
निर्ग्रन्थों–सा करेंगे काम,
पूज्य पदों को योग्य प्रणाम।
मात–पिता–गुरु आज्ञा मान,
सत्पथ पर चल, बनें महान।
करें सकल दुख का अवसान,
फिर पहुँचें हम शिवपुर थान।



2.सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि

इक पर्वत है बड़ा ही प्यारा
झरना भी है प्यारा–न्यारा।
फल–फूलों–वृक्षों से सुन्दर,
औषधि, पवन है सर्व रोगहर।

भव्य जिनालय उसके ऊपर,
भक्ति, जयध्वनि होती उस पर।
मेंढे को णमोकार सुनाया,
'मेंढागिरि' है नाम कहाया।
शीतलनाथ की ध्वनि थी गूँजी,
मुक्तावृष्टि वहाँ की पूँजी।
'मुक्तागिरि' है नाम विख्यात,
मुक्ति पाओ, आओ भ्रात!

3.अरहंत परमेष्ठी



जिनने मुनि बन, आतम ध्याया,
घातिकर्म को दूर भगाया।
दर्शन–ज्ञान–वीर्य–सुख पाया,
हम को मुक्तिमार्ग बताया।
उनको कहते हैं अरहंत,
उनके गुणों का आदि–न–अंत।
आओ, उनको करें प्रणाम,
प्रभु–सम हम पहुँचें शिवधाम।

4.सिद्ध परमेष्ठी

अष्ट कर्म हैं नाशे जिनने,
अष्ट गुणों को पाया उनने।
सिद्धालय में सदा हैं रहते,
सिद्ध प्रभु उनको हैं कहते।
ज्ञाता–दृष्टा जो हैं रहते,
राग–द्वेष कभी न करते।
सकल ज्ञेय को जाना करते,
निजानन्द–रस में ही रमते।
शुद्धातम हम को दर्शाते,
मुक्तिपुरी से कभी न आते।
आओ, उनको करें नमन,
निजानन्द में रहें मगन।



5. भावना



प्रतिपल हम लें प्रभु का नाम,
वीर प्रभु–सा करेंगे काम।
वीर बनें, और बुद्धिमान,
सत्संस्कारों की हों खान।
मात–पिता–गुरु महिमा जान,
उनकी सेवा करें महान।
निज को पर से भिन्न पिछान,
बनें एक दिन हम भगवान।

6.कषाय



क्रोध, मान और माया, लोभ,
पहुँचाते हैं जीव को क्षोभ।
आतम को ये कसते हैं,
इन्हें कषायें कहते हैं॥



राग–द्वेष भी इनको कहते,
ये विभाव दुखदायी मैल।
जीव सदा इनके वश भ्रमते,
जैसे हों कोल्हू के बैल॥





तत्त्वज्ञान पा इनको नाशो,
पाओ सदा निराकुल सुख।
मुक्तिपुरी में सदा विराजो,
पुनः कभी न पाओ दुख॥



7. छह द्रव्य (दोहा)

जीव और पुद्गल भिन्न हैं,
धर्म, अधर्म, आकाश।
काल सहित छह द्रव्य हैं,
जीव द्रव्य है खास॥
छहों द्रव्यमय विश्व है,
विश्व अनादि–अनंत।
भगवन् केवल जानते,
अत: सुखी हैं अनन्त॥



8.तोता बोला

तोता बोला– राम–राम,
कब ध्याओगे आतमराम।
पहले जानो आतमराम,
पीछे करो दूसरे काम।
आतम है आनन्द का धाम,
मिलता जहाँ पूर्ण विश्राम।
जिनमन्दिर में प्रभु का धाम,
तन–मन्दिर में आतमराम।



छोड़ो सब संसार के काम ,
जिनदर्शन है पहला काम।
प्रभु को लख, ध्या आतमराम,
जिससे मिलता मुक्तिधाम।



मै तो रटने को बदनाम, तुम तो समझो आतमराम।
अवसर चूक न जाना राम, झटपट ध्याओ आतमराम।

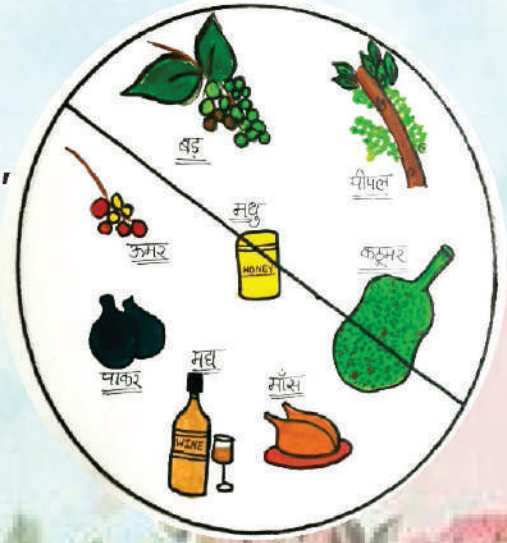


9.प्रकृति की सीख

पर्वत कहता, अचल खड़े हो,
आत्मन् ! निज शुद्धातम ध्याओ।
झरना कहता, झर–झर करके,
सर्व कर्म–मल धूल झड़ाओ॥
नदियाँ कहतीं, कल–कल करके,
आतमहित कल पर मत टालो।
वृक्ष फलों से लदकर कहता,
विनय–भाव अपने मन लाओ॥
सर–सर बहती हवा है कहती,
संग रहित हो बढ़ते जाओ।
शान्त समुद्र सदा है कहता,
चिदानन्द में ही रम जाओ॥

10.श्रावक के अष्ट मूलगुण (दोहा)

मद्य,माँस, मधु तीन को,
कहते तीन मकार।
बड़, पीपल, ऊमर, कठूमर,
पाकर फल–आहार॥
इन आठों का त्याग है,
श्रावक का कर्तव्य।
अष्ट मूलगुण धारकर,
सुख पाता है भव्य॥





11. जिनभक्त मेंढक

एक था मेंढक बड़ा ही प्यारा,
श्री जिनवर का भक्त था न्यारा।
जागा पूर्वजन्म संस्कार,
जिन–पूजन का किया विचार।

मुख में लेकर के इक फूल,
वीर–चरण की पाने धूल।
लेकर भक्ति–भाव भला,
समवशरण की ओर चला।

फुदक–फुदक कर जाता था,
फूला नहीं समाता था।
श्रेणिक नाम का राजा था,
जिनध्वनि सुनने जाता था।
हाथी पर था हुआ सवार,
जिनदर्शन की धुन थी अपार।

मेंढक पर हाथी का पैर,
पड़ा तो न थी उसकी खैर।
मेंढक के तब निकले प्राण,
उसने किया स्वर्ग को प्रयाण।
देव बना, पा अवधिज्ञान,
भक्तिभाव–फल–महिमा जान।

पहुँचा समवशरण में तत्क्षण,
जिनभक्ति में डूबा कण–कण।
पहुँचा राजा से भी पहले,
जिनवर–पूजन कर लो पहले।

यह भी पढ़ें :–

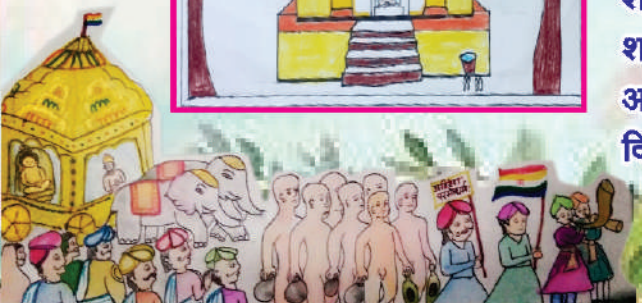
आँवला

खालो, खालो एक आँवला, ताकत देता है भरपूर।
देह को सुंदर, स्वस्थ बनाता, रक्त शुद्ध करता भरपूर॥
सब रोगों को रोक सके, तन में वह शक्ति भरता है।
रोग यदि तन को घेरे तो, उनका नाश ये करता है॥
आँखों की यह ज्योति बढ़ाता, दाँतों को बल देता है।
उदर–रोग सब दूर करे, यह बहु उपयोगी होता है॥
हिंसा जनित दवाएँ तजकर,
भोजन–पान अहिंसक लो।
तन–मन स्वस्थ रखो तुम अपना,
धर्मध्यान में चित्त धरो॥

दैनिक चर्या



सूर्योदय के पहले उठना।
उठकर णमोकार तुम जपना॥
मंजन, शौच आदि फिर करना।
वस्त्र पहन, जिनमन्दिर जाना॥
योग्य समय पर भोजन करना।
विनय सहित ज्ञानार्जन करना॥
रात्रिभोजन कभी न करना।
मात–पिता की सेवा करना॥
शयन–पूर्व शुद्धातम ध्याना।
शांतचित्त हो फिर सो जाना॥
आत्मन्! सदा ध्यान में रखना।
दिनचर्या का पालन करना॥

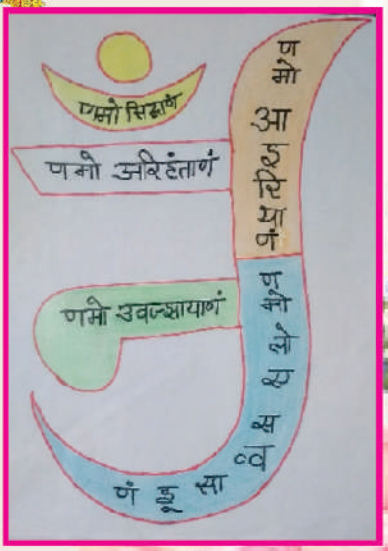


1.प्रार्थना



हे प्रभु ! तुमने शिव–सुख पाया,
सुख पाने का मार्ग बताया।
वीतराग–विज्ञान को पाया,
फिर उसका रहस्य समझाया॥
पहले पथ पर चल फल पाया,
फिर हमको शिव–पथ बतलाया।
तुमने निजनिधि स्वयं में पायी,
फिर हमको वह विधि सिखलायी॥
निज जीवन को धन्य बनाया,
फिर जीने का मार्ग बताया।
हम सब तुमको शीश नवायें,
तुम–सम हम भी शिव–पद पायें॥

2.पंच परमेष्ठी



परम पद में जो स्थित हैं,
उनको परमेष्ठी कहते।
जग में पंच परम पद होते,
उन्हें पंच परमेष्ठी कहते॥
अरहंत और सिद्ध भगवन् हैं,
आचार्य, उपाध्याय, साधु मुनि।
पाँचों का जो ध्यान लगाता,
वह पाता है मुक्तिपुरी॥

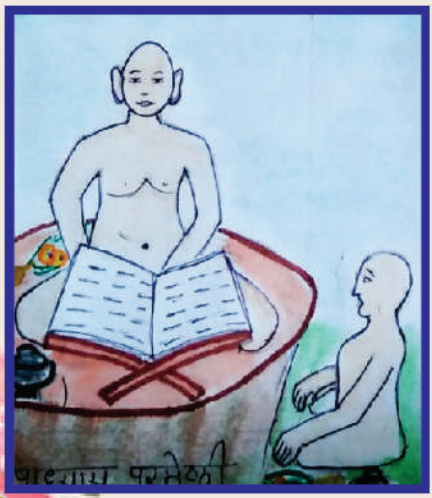


3.आचार्य परमेष्ठी (दोहा)

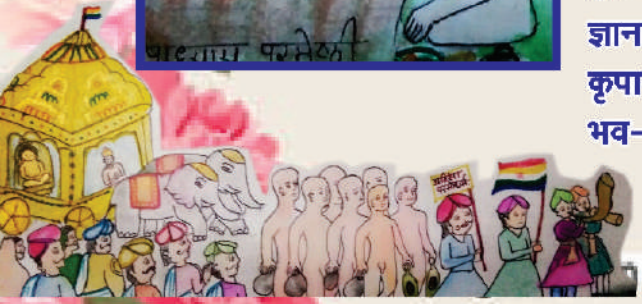


रत्नत्रय के विशेष से, बने संघ में प्रधान।
ध्याते नित शुद्धात्मा, करते आनन्द पान॥
करुणा जब उत्पन्न हो, देते धर्म–उपदेश।
योग्य जान दीक्षार्थी को, देते दीक्षा विशेष॥
पंचाचार वे पालते, पालन करता संघ।
वे आचार्य परमेष्ठी, रहते सदा निःसंग॥
हम भी भाते भावना, चलें मोक्ष के पंथ।
आप कृपा से हम बनें, मुक्तिपुरी के कंत॥

4.उपाध्याय परमेष्ठी



बहु शास्त्रों के ज्ञाता होकर,
बने संघ में जो पाठक।
शास्त्रों का सारांश प्राप्तकर,
ध्याते रहते निज ज्ञायक॥
जब उपयोग स्वयं से च्युत हो,
शास्त्राभ्यास स्वयं करते।
औरों को भी शास्त्र पढ़ाते,
उपाध्याय उनको कहते॥
हम भी पायें शास्त्र–सार को,
ज्ञानानन्द सदा ध्यायें।
कृपा–दृष्टि मिल जाय आपकी,
भव–सागर से तिर जायें॥



5.साधु परमेष्ठी



जो मुनिधर्म के धारक साधु,
सकल पदों से रहते मुक्त।
आत्मस्वरूप के साधक हैं जो,
अट्ठाईस मूलगुण युक्त॥
जो आरम्भ-परिग्रह विरहित,
ज्ञान-ध्यान में रहते लीन।
जग-प्रपंच से दूर रहें जो,
सकल कर्म को करते क्षीण॥
उन्हें कहा साधु परमेष्ठी,
वीतराग-विज्ञान स्वरूप।
वंदनीय, वे पूजनीय हैं,
हम सब के आदर्श अनूप॥



6. श्रावक के छह आवश्यक

जिनवर की पूजन नित करना।
जिनगुरु की उपासना करना॥
स्वाध्याय कर निज को लखना।
संयमपूर्वक जीवन जीना॥
तप से कर्म-शत्रु को दलना।
दान स्व-पर हित हेतु करना॥
प्रतिदिन छह कर्तव्य पालना।
आवश्यक श्रावक के जानना॥



7.पानी की बूँद



पानी की इक बूँद है कहती,
बिना छना मुझको मत पीना।
मुझमें जीव असंख्य हैं रहते,
जिनवाणी माँ का है कहना।
स्वच्छ, छना पानी ही पीना,
पानी व्यर्थ खर्च मत करना।
स्वस्थ रहेगा तन-मन तेरा,
ज्ञान व सुख का रहेगा डेरा।
प्रभु-भक्ति में चित्त रमेगा,
आत्मध्यान कर शिवसुख होगा।
बच्चो ! इक संकल्प है करना,
पानी सदा छानकर पीना।



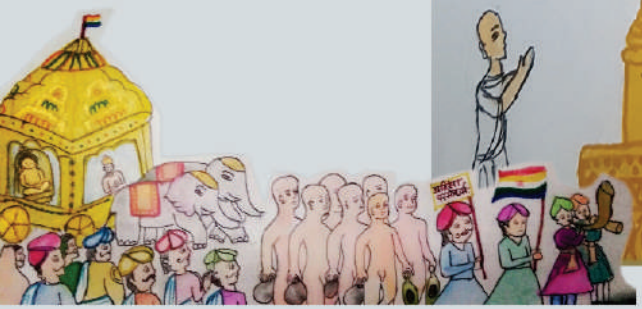
8.जिनप्रतिमा (दोहा)

जिनप्रतिमा जिनदेव की, जिनवर के ही समान।
जिनवर का स्मरण हो, जो शोभें शिवथान॥
नवदेवों का स्मरण, होता जिनबिम्ब देख।
दुष्ट-कर्म सब नष्ट हों, यह आगम का लेख॥
जिनप्रतिमा को देखते, दिखता आत्म-स्वभाव।
बढ़ता आनन्द प्रतिसमय, प्रगटे शुद्ध-स्वभाव॥
स्वच्छ रहें जिनबिम्ब सब, यह श्रावक-कर्तव्य।
दर्शन, पूजन, ध्यान से, सुख पाता है भव्य॥



९.मानस्तम्भ

जिसे देखकर मान गलित हो,
उसको कहते मानस्तम्भ।
आत्मज्ञान का कारण है वह,
अतः हैं कहते ज्ञानस्तम्भ॥
समवशरण के चार द्वार पर,
स्थित रहते मानस्तम्भ।
जिनमन्दिर के प्रांगण को भी,
शोभित करते मानस्तम्भ॥
जिनबिम्बों से सदा सुसज्जित,
सज्जित धार्मिक चिह्नों से।
मानो कहता, मन्दिर आओ,
मोह तजो जिनदर्शन से॥
दूर-दूर से जिनप्रभु को लख,
भविजन पाते भेदविज्ञान।
गौतमस्वामी-सम हम बच्चे,
इक दिन पायें मोक्षनिधान॥



10.दिनचर्या

सूर्योदय के पहले उठना।
उठकर णमोकार तुम जपना॥
मंजन, शौच आदि फिर करना।
मल-मल कर तन का मल हरना॥
स्वच्छ वस्त्र धारण फिर करना।
जिनदर्शन कर अघमल हरना॥
स्वल्पाहार स्वास्थ्यकर करना।
विनय सहित ज्ञानार्जन करना॥
योग्य समय पर भोजन करना।
दिन में पठन-मनन नित करना॥
पढ़-लिख कर नित उन्नति करना।
शाम का भोजन समय पे करना॥
रात्रिभोजन कभी न करना।
मनोयोग से अध्ययन करना॥
शयन-पूर्व शुद्धातम ध्याना।
शान्त-चित्त हो, फिर सो जाना॥
आत्मन् ! सदा ध्यान में रखना।
दिनचर्या का पालन करना॥
रोगरहित तन, दृढ़ मन होगा।
धन-सम्पन्न, सुखी तू होगा॥



11.विनयवान ग्वाला

एक गाँव में था इक ग्वाला, 'कौण्डेश' था बड़ा निराला।
गाय चराने जंगल जाता, दिवस ढले वह घर को आता।
एक दिवस जब पहुँचा जंगल, जला हुआ था सारा जंगल।
एक वृक्ष लख हरा–भरा, ग्वाल अचम्भित हुआ बड़ा।
वृक्ष की कोटर में जिन–शास्त्र, ग्वाला समझा सारी बात।
शास्त्र–प्रभाव को जान लिया, जिनवाणी को नमन किया।
आदर सहित उठाया शास्त्र, पूजा करता था दिन–रात।
एक दिवस आये मुनिराज, हर्षाया तब जैन समाज।
नाच उठा ग्वाला यह सुन, शास्त्र–दान का शुभ–चिन्तन।
मुनि के कर में दिया सुशास्त्र, मुक्ति–प्राप्ति का बना सुपात्र।
उस भव की आयु कर पूर्ण, श्रेष्ठी गृह जन्मा सुखपूर्ण।
"कलिकाल सर्वज्ञ' हुआ, जिनध्वनि का मर्मज्ञ हुआ।
'कुन्दकुन्द' है उनका नाम, मोह काँपता है सुन नाम।
शास्त्र–ज्ञान का है यह फल, स्व–पर विवेक जगे प्रतिपल।
अतः विनय से पढ़ना शास्त्र, सुनना, निज में रमना भ्रात!
ज्ञान–विराग को रखना साथ, मोह–वमन कर सुख लो हाथ।



यह भी पढ़ें:–

आम



जानो आम फलों का राजा,
खाओ जब तक वह हो ताजा।
तोतापरी, बदामी आम,
चौंसा, दसहरी, लँगड़ा आम।
तन को करता है बलवान,
मन को करता शक्तिमान।
उसमें विटामिन–ए भरपूर,
गाजर से भी ज्यादा सूर।
आँखों को होता हितकारी,
भागें दूर सभी बीमारी।
उसकी गिरी भी है गुणकारी,
दंत–चिकित्सक है हितकारी।
गर्मी में ठंडक दे आम,
खाओ खूब रसीले आम।



तज दो हिंसक सब उपचार,
करो अहिंसक ही आहार।
तन–मन होगा तब अविकार,
करना प्रतिक्षण तत्त्वविचार।





1.सरस्वती-वंदना

सरस्वती है, माँ जिनवाणी,
नहीं कोई वह कल्पित देवी।
तीर्थंकर की वाणी है वह,
हम हैं उस वाणी के सेवी॥

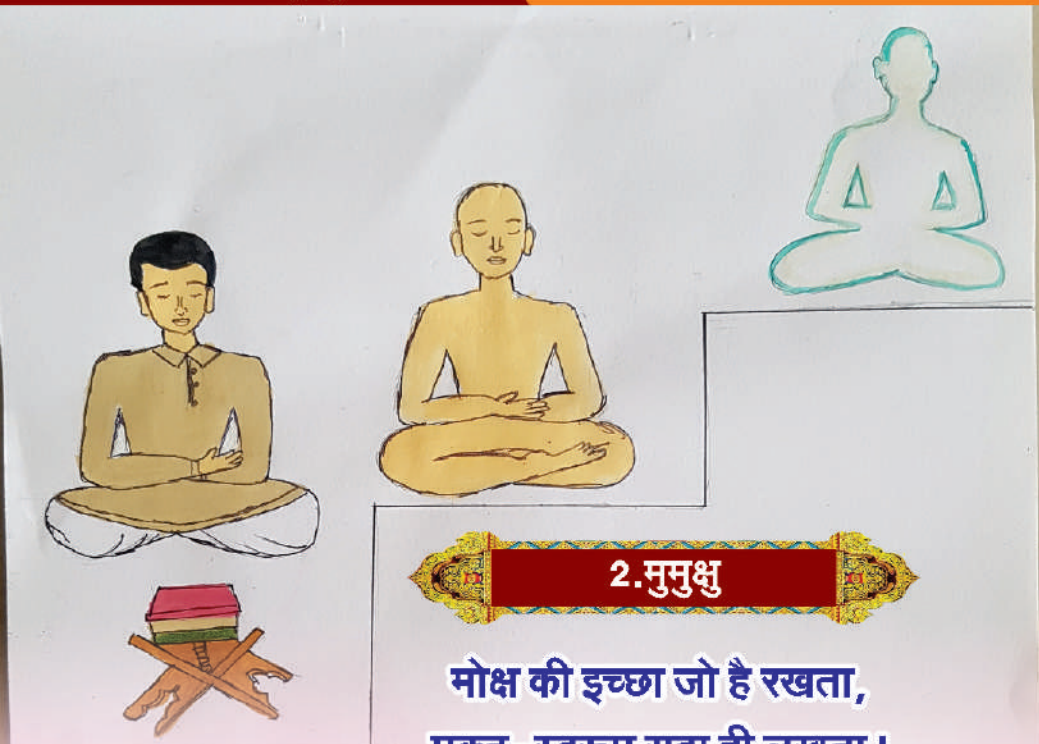


जिनवचनों में जो रमते हैं,
मोह-वमन उनका हो जाता।
पर से भिन्न निजातम लखते,
पूर्ण निराकुल शिवसुख पाता॥



नित्यबोधिनी जिनवाणी ने,
भेदज्ञान की कला सिखायी।
वंदन सरस्वती को करते,
जिसने निज-निधि निज में बतायी॥

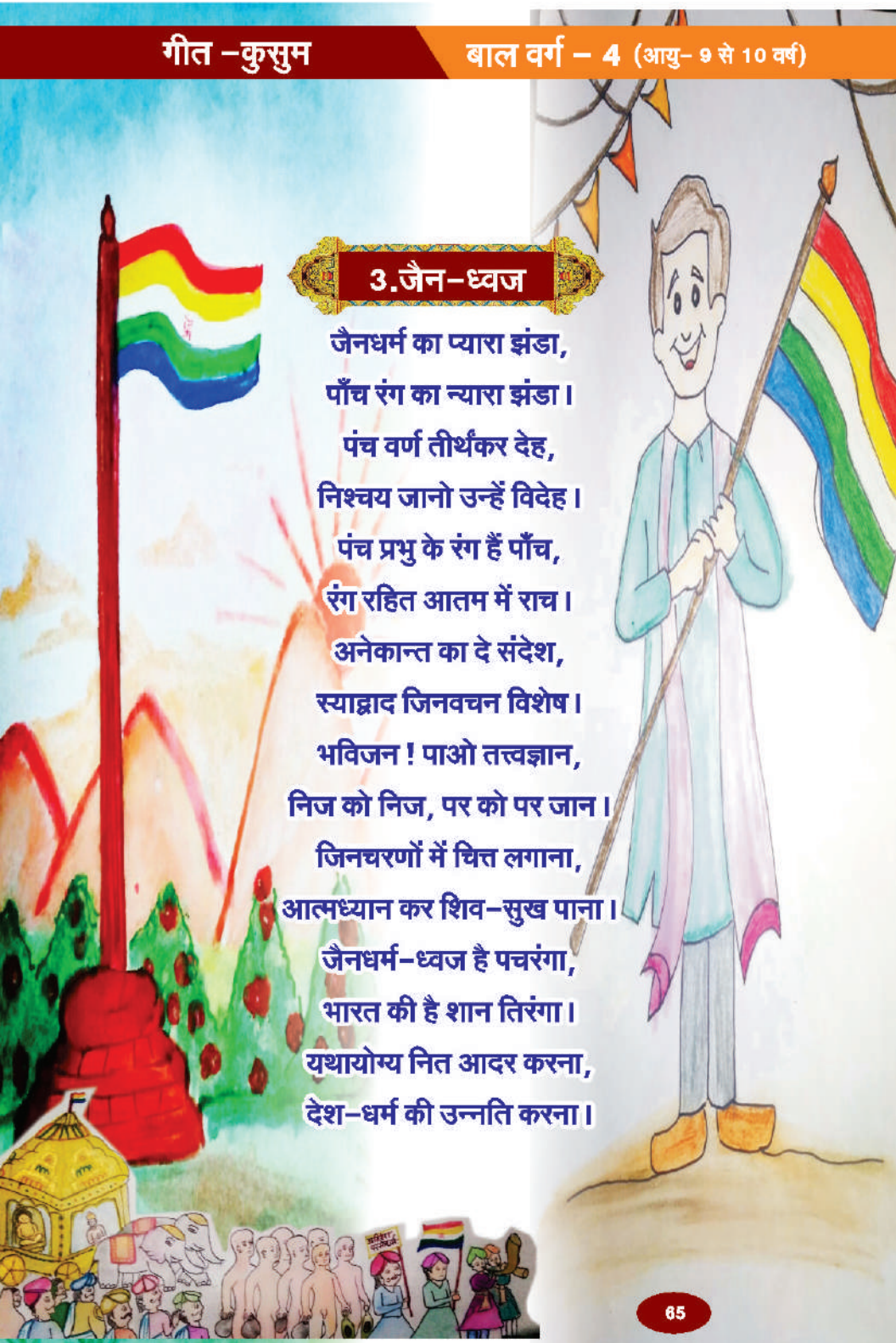




2.मुमुक्षु

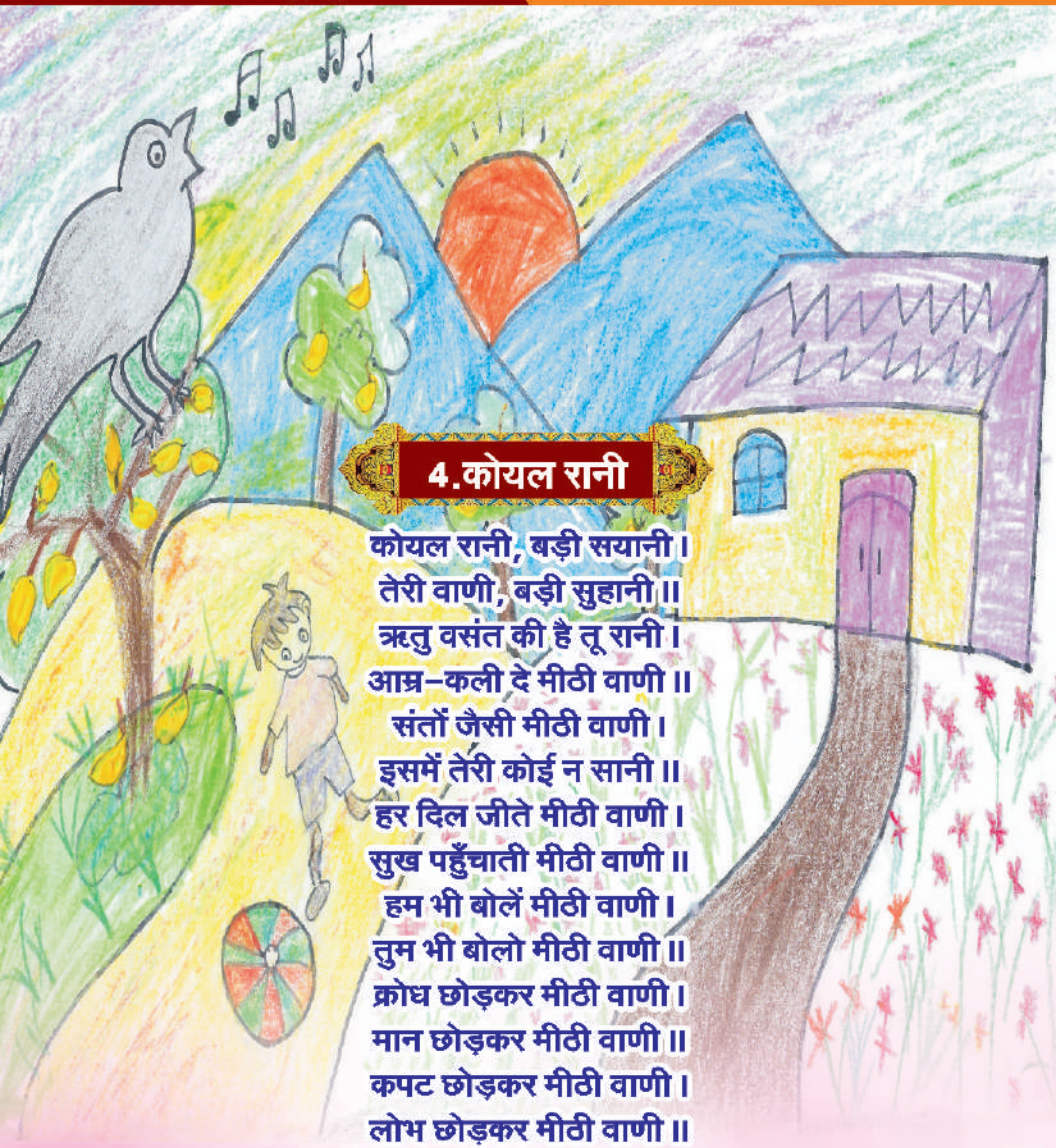
मोक्ष की इच्छा जो है रखता,
मुक्त-स्वरूप सदा ही लखता।
सदाचार का पालन करता,
जिनभक्ति में नित मन रमता।
स्वाध्याय से स्वयं को लखता,
सामायिक कर निज-रस चखता।
न्याय-नीतिमय जीवन जीता,
दया-दान कर निज-सुख पीता।
देश-धर्म की उन्नति करता,
वही मुमुक्षु मोक्ष को वरता।





3.जैन-ध्वज

जैनधर्म का प्यारा झंडा,
पाँच रंग का न्यारा झंडा।
पंच वर्ण तीर्थंकर देह,
निश्चय जानो उन्हें विदेह।
पंच प्रभु के रंग हैं पाँच,
रंग रहित आतम में राच।
अनेकान्त का दे संदेश,
स्याद्वाद जिनवचन विशेष।
भविजन ! पाओ तत्त्वज्ञान,
निज को निज, पर को पर जान।
जिनचरणों में चित्त लगाना,
आत्मध्यान कर शिव-सुख पाना।
जैनधर्म-ध्वज है पचरंगा,
भारत की है शान तिरंगा।
यथायोग्य नित आदर करना,
देश-धर्म की उन्नति करना।



4.कोयल रानी

कोयल रानी, बड़ी सयानी।
तेरी वाणी, बड़ी सुहानी॥
ऋतु वसंत की है तू रानी।
आम्र–कली दे मीठी वाणी॥
संतों जैसी मीठी वाणी।
इसमें तेरी कोई न सानी॥
हर दिल जीते मीठी वाणी।
सुख पहुँचाती मीठी वाणी॥
हम भी बोलें मीठी वाणी।
तुम भी बोलो मीठी वाणी॥
क्रोध छोड़कर मीठी वाणी।
मान छोड़कर मीठी वाणी॥
कपट छोड़कर मीठी वाणी।
लोभ छोड़कर मीठी वाणी॥
हित–मित–प्रिय हो मीठी वाणी।
पाप रहित हो मीठी वाणी॥
कोयल की है मीठी वाणी।
हम सब की हो मीठी वाणी॥





5.रात्रिभोजन तज दो

सूरज का प्रकाश कम होता,
या सूरज जब अस्त है होता।
जीवों की उत्पत्ति बढ़ती,
भोजन करने योग्य न होता॥
फिर भी निशि–भोजन जो करते,
उनका तन–मन स्वस्थ न होता।
भोजन में अति आसक्ति से,
राग–भाव अति तीव्र है होता॥
जीवदया–बिन, अविशुद्धि से,
आतम–हित प्रति लक्ष्य न होता।
आत्महितैषी जीव मुमुक्षु,
रात्रिभोजन कभी न करता॥
पंछी भी निशि–भोजन तजते,
फिर तो तुम मनुष्य हो भाई।
धर्म–संस्कृति रक्षण हेतु,
रात्रिभोजन तज दो भाई॥



6.अभिवादन







करो 'नमोऽस्तु' अरहंत, सिद्ध को,
आचार्यों, उपाध्यायों को।
मुनिगण को भी करो 'नमोऽस्तु',
'वंदामि' आर्यिकाजी को॥
ऐलक जी को कह 'इच्छामि',
'इच्छामि' क्षुल्लक जी को।
'जयजिनेन्द्र' साधर्मीजन को,
मात–पिता और गुरुजन को॥
हाथ जोड़कर आदरपूर्वक,
अभिवादन करना सबको।
यथायोग्य अभिवादन करता,
वह पाता सुख–संपत्ति को॥



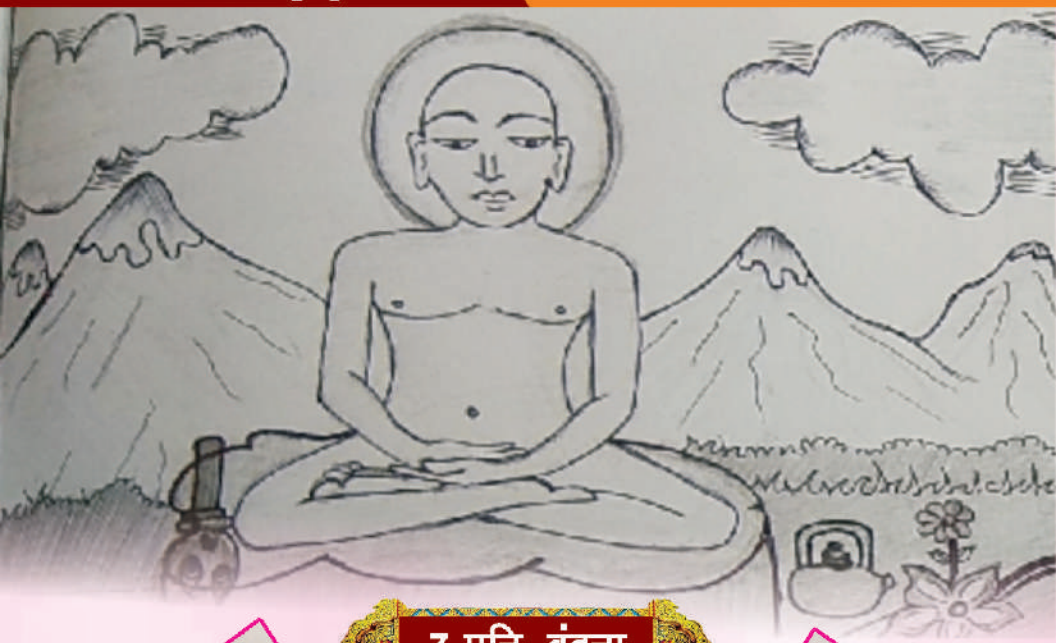














7.मुनि-वंदना



हे मुनिवर ! तुम नग्न दिगम्बर,
परिग्रह से रहते हो दूर।
ज्ञान-ध्यान-तप नित करते हो,
कर्मों को करते चकचूर ॥
शुद्धभाव से निज-रस चखते,
रहते नित आनन्द से पूर।
होता कभी शुभोपयोग,
पर अशुभ भाव से रहते दूर ॥
आचार्य, उपाध्याय, साधु तीनों,
वीतराग-रस से भरपूर।
वंदन करते मन-वच-तन से,
बन जायें तुम-सम हम सूर ॥



8.आलू कहता

आलू का हर कतरा कहता, मुझको कभी न खाना तुम।
जीव अनन्त हैं मेरे अंदर, हर कतरे में जानो तुम॥
जमींकन्द हूँ जमीं के अन्दर, अंधकार में पलता हूँ।
रवि–प्रकाश बिन पैदा होता, सूक्ष्म जीव का बस्ता हूँ॥
नहीं सूखता, सड़ता केवल, जीव रहित न होता हूँ।
मुझमें अति आसक्त मनुज को, अपना बंधु बनाता हूँ॥
वर्षा–ऋतु आकर के मुझमें, जीव अनन्त बढ़ाती है।
तन–मन के हित साधन हेतु, मुझे त्यागने कहती है॥
गाजर मूली, प्याज आदि सब, मेरे भैया–बहना हैं।
हम सबको न खाना कभी तुम, जिनवाणी का कहना है॥
आतम–हित यदि करना चाहो, जीवदया को पालो तुम।
आलू का कण–कण है कहता,
मुझको कभी न खाना तुम॥



9.शिवमग न्यारा

अ रहंत का शिवमग न्यारा,
आ त्मा को लगता है प्यारा।
इ स मग पर चल हित करना,
ई श्वर पर श्रद्धा रखना।
उ पसर्गों से मत डरना,
ऊँ ची ही भावना धरना।
ऋ षियों का समागम करना,
ए कत्व विभक्त में रमना।
ऐ से शुद्धातम ध्याना,
ओं कार के सार को पाना।
औ षधि-सम शिवमग जानो,
अं तिम क्षण समता धारो॥
अ हा हा ! आनन्द शाश्वत लो,
इस राह पे झट-पट चल दो।



10.चेतो चेतन

इक जंगल में एक वृक्ष था,
हरा–भरा फल–फूलों–युक्त।
उस पर बैठा देख रहा था,
वह मनुष्य था यौवन–युक्त॥
जंगल में जो आग लगी थी,
बढ़ती जाती वृक्ष की ओर।
अभी जला देगी यह उसको,
मूर्ख न छोड़े विषय की डोर॥

आखिर अंत समय जब आया,
भस्म हुआ वह अग्नि में।
चेत–चेत चेतो रे चेतन !
चिदानन्द पी निज ही में॥
अवसर चूक न जाना चेतन !
मौत बड़ी है जल्दी में।
मोह तजो, मुनिधर्म धार कर,
निजानन्द लो मुक्ति में॥



11.कुत्ता बना देव



एक श्वान उपवन में पहुँचा, घूम रहा था यहाँ–वहाँ।
भूख सताने लगी उसे जब, भोजन खोजने लगा वहाँ॥
उसे दिखी भोजन–सामग्री, वह तो उस पर टूट पड़ा।
पर वह तो थी यज्ञ–सामग्री, उस पर टूटा कहर बड़ा॥
याज्ञिक ने जैसे ही देखा, आग बबूला हुआ बड़ा।
उसने उसको मारा–पीटा, उसको कर दिया अधमरा॥
तभी वहाँ जीवंधर आये, समझ गये वे सारी कथा।
करुणा से उपचार किया, पर वह तो मरणासन्न ही था॥
णमोकार महामंत्र सुनाकर, उसका जीवन सफल किया।
भाव–विशुद्धि हुई श्वान की, वह तो मरकर देव हुआ॥
देव वहाँ तत्क्षण ही आया, जीवन्धर को नमन किया।
देव का सारा परिचय पाकर, उन्हें अचम्भा नहीं हुआ॥
णमोकार तो महामंत्र है, मुक्तिमार्ग–पाथेय कहा।
मुक्तिद्वार जो तत्क्षण खोले, देवगति की कौन कथा ?
णमोकार की महिमा सुनकर, णमोकार का जाप करो।
भाव–विशुद्धि बढ़ाओ अपनी, जीवदया मन में भर लो॥



यह भी पढ़ें :–

धर्म-प्रभावना



आओ बच्चो ! देखो बच्चो !
जिनमन्दिर हैं, पुकार रहे।
जैन-संस्कृति, तीर्थक्षेत्र और
जैन-शास्त्र भी निहार रहे॥
आओ प्रण लें, क्षीण न होगी,
जिनशासन की भावना।
स्वार्थ त्यागकर सेवा करेंगे,
करेंगे धर्मप्रभावना॥

सूखे मेवे









सर्दी का मौसम जब आये,
प्रतिदिन खाओ इक अखरोट।
गर्मी व बारिश में खाओ,
जल में भिगोके मुनक्का रोज॥
कुछ बादाम भिगोकर खाओ,
काजू, किशमिश, पिस्ता लो॥
बारह महीने नियमित खाओ,
सुबह पेट जब खाली हो॥
पोषक तत्त्व देह पाता है,
निश्चित मात्रा में ही लो।
हिंसाजनित दवाएँ तज दो,
भोजन-पान अहिंसक लो॥

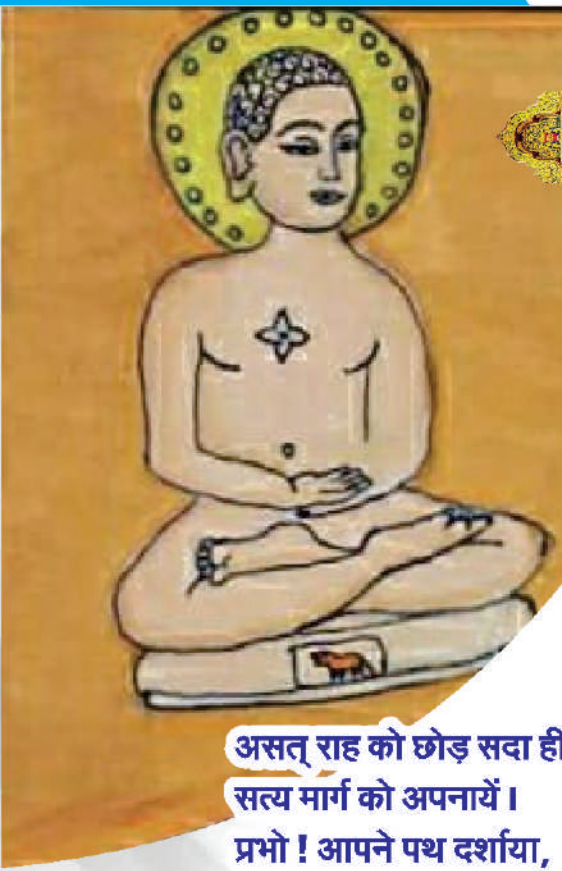


जिनवाणी माँ तुमसे कुछ कहना चाहती है

जिनवाणी माँ तुमसे कुछ कहना चाहती है ...
जिनवाणी में वस्तु-स्वरूप की बात है,
भेद-विज्ञान और वैराग्य की सौगात है।
अनेकान्त सिद्धान्त और स्याद्वाद कथन शैली है,
अहिंसा और अपरिग्रह ही सुखी-जीवन की थैली है।
जिनवाणी जागरण के गीत सुनाती है,
चैतन्य का चमत्कार जिनवाणी ही बताती है।
जिनवाणी सुख से जीने की कला सिखाती है,
मृत्यु को महोत्सव भी जिनवाणी ही बनाती है।
पाप से छुड़ाकर धर्म में लगाती है,
विनय, भक्ति, संयम की महिमा बताती है,
देश और धर्म का उत्थान कराती है,
मोक्षमार्ग से मुक्ति का सुख दिलाती है।
महापुरुष, महासतियों-सी जीवन-कला सिखाती है,
जिनवाणी के हर कथन को उन्हें जीता दिखाती है।
गणित और विज्ञान का सद्ज्ञान कराती है,
भूगोल के रहस्य से पर्दा उठाती है।

क्या तुम इस सद्ज्ञान को नहीं पाना चाहोगे ?
क्या तुम इस संसार में ही रुलना चाहोगे ?
जिनवाणी माँ तुमसे कुछ कहना चाहती है,
जिनवाणी तुम्हें निराकुल सुख देना चाहती है।





1.वीर प्रभु–वंदना

हे वीर ! हे वीर ! हे वीर ! महावीर !
महावीर !
हम भारत भूमि के बच्चे,
नित देश–धर्म की शान बढ़ायें।
सत्य, अहिंसा, अनेकान्त की
राह चलें, समता–सुख पायें ॥
विनय पूर्वक ज्ञान प्राप्त कर,
विनय से ज्ञान का फल पायें।
ज्ञान का मान कभी न हो,
हम मान नाश कर सुख पायें ॥

असत् राह को छोड़ सदा ही,
सत्य मार्ग को अपनायें।
प्रभो ! आपने पथ दर्शाया,
उस पर चल हम सुख पायें ॥
परहित करते हुए विभो ! हम
निजानन्द में रम जायें।
सरिता–सदृश बहें, अन्त में
सागर में ही समा जायें ॥
हे वीर ! आपके चरणों में,
हम सादर शीश झुकाते हैं।
तुम–समान हम बन जायें,
बस, यही भावना भाते हैं ॥





2. मंगल

मंगल हैं अरहंत प्रभु जी, सिद्ध प्रभु भी हैं मंगल।
साधु तीनों मंगल हैं, प्रभु केवली कथित धर्म मंगल॥
तीन लोक में चार ही मंगल, निज आतम निश्चय मंगल।
पाप नाशकर सुख प्रकटावें, सबका जीवन हो मंगल॥

उत्तम

उत्तम हैं अरहंत प्रभु जी,
सिद्ध प्रभु भी हैं उत्तम।
साधु तीनों उत्तम हैं,
प्रभु केवली कथित धर्म उत्तम॥
तीन लोक में चार ही उत्तम,
निज आतम निश्चय उत्तम।
वीतराग–विज्ञान प्रकट कर,
सबका जीवन हो उत्तम॥



शरण

अरहंत प्रभु की शरण में जाऊँ,
सिद्ध प्रभु की भी शरणा।
साधु तीन की शरण में जाऊँ,
केवली कथित धर्म शरणा॥
चारों की ही शरण में जाऊँ,
निज आतम निश्चय शरणा।
प्रभु आश्रय, फिर निज आश्रय ले,
पाऊँ मुक्तिपुरी शरणा॥









3.आत्मनिर्भरता

अपना काम स्वयं ही करना।
दूजे पर निर्भर मत रहना॥
खुद पर सदा भरोसा रखना।
कार्य सदा स्व–विवेक से करना॥
करने–योग्य स्वयं ही करना।
तजने–योग्य स्वयं ही तजना॥
आतम–निर्भर तुम भी बनना।
यह गुण औरों में भी भरना॥
यह सुख से जीने का रस्ता।
इससे विमुख सदा ही फसता॥

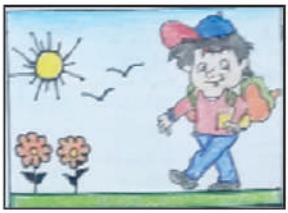


4.जीवन–मंत्र

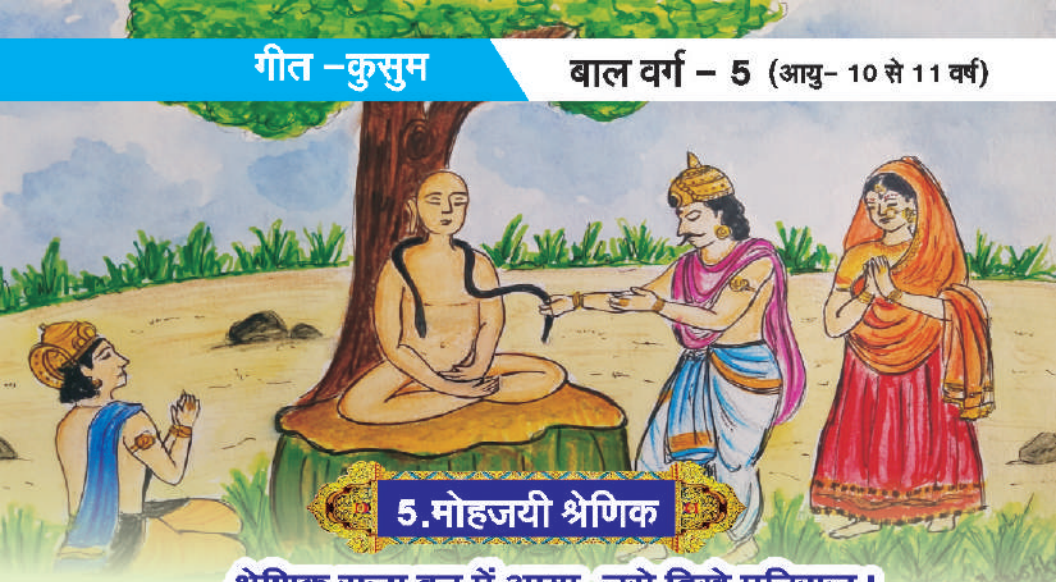
प्रातः को जल्दी उठना, प्रमाद छोड़कर।
रात्रि में जल्दी सोना, तनाव छोड़कर॥
भोजन दिवस में करना, निशि–भोज छोड़कर।
पोषक आहार घर का लो, बाजार का तजकर॥
प्रासुक ही पानी पीना, अनछना छोड़कर।
तन–मन को साफ रखना, आलस्य छोड़कर॥
परमात्म–ध्यान करना, सब काम छोड़कर।
निज आत्म–ध्यान करना, परभाव छोड़कर॥
शिक्षा सदा लेते रहो तुम, समझ–समझ कर।
उसका प्रयोग करते रहो, समय–समय पर॥
देशोन्नति भी करना, निज स्वार्थ छोड़कर।
धर्मोन्नति भी करना, धर्मांधता तजकर॥
इस सीख का पालन करो, तुम मनोयोग से।
सक्षम, सुखी रहोगे सदा, तन–मन–धन से॥











5.मोहजयी श्रेणिक

श्रेणिक राजा वन में आया, उसे दिखे मुनिराज।
वृक्ष के तल में शान्तभाव से, मुनिवर रहे विराज॥
जैन–मुनि लख श्रेणिक मन में, आया क्रूर विचार।
रानी चेलना के गुरुवर पर, उसने किया प्रहार॥
मरा साँप गले में डाला, किया स्वयं पर नाज।
नरक गति, मिथ्यात्व–प्रकृति के, बंध–योग्य था काज॥
अट्टहास कर नृप ने महल को, किया त्वरित प्रस्थान।
समता धर मुनि नहीं डिगे, और किया भेद–विज्ञान॥
तीन दिवस पश्चात् रानी को, ज्ञात हुआ सब राज।
व्याकुल हो तत्क्षण वह पहुँची, मुनि थे जहाँ विराज॥
अभय संग चेलना नृपी ने, दूर किया उपसर्ग।
मुनि की समता देख नृपति का, विलय हुआ सब दर्प॥
धर्मवृद्धि कह समतापूर्वक, दिया तत्त्व–उपदेश।
भव–तन–भोग असार जानकर, निज ज्ञायक को देख॥
हे श्रेणिक ! निज को पहचानो, तज दो अन्य विचार।
सिद्ध–समान चिदानन्द ध्याओ, हो जाओ भव पार॥
श्रेणिक ने निज आतम ध्याया, प्राप्त किया सम्यक्त्व।
मोह–प्रकृतियाँ तत्क्षण नाशीं, प्रगटा सुख, सर्वस्व॥
मुनि यशोधर को वंदन कर, धन्य हुआ नृप–श्रेष्ठ।
वीर प्रभु के समवशरण में, बन गया श्रावक–ज्येष्ठ॥



यह भी पढ़ें :–

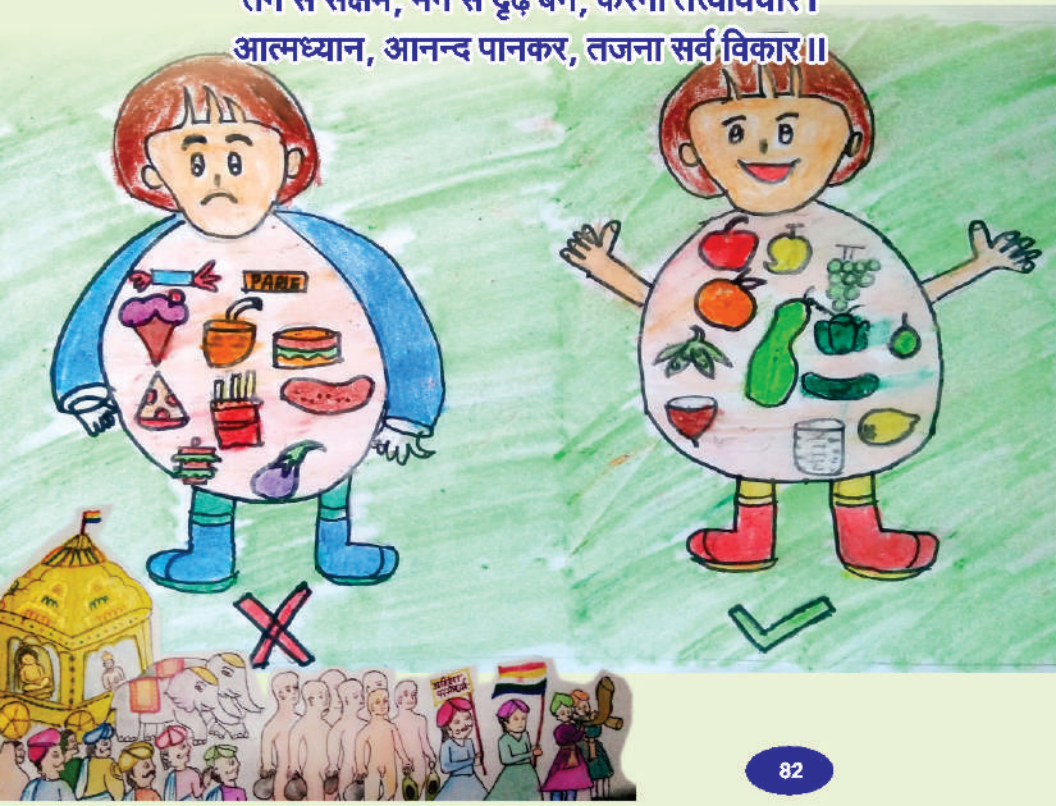
स्वाध्याय की प्रेरणा

जैसे बंदर उछला करता,
एक वृक्ष से दूजे वृक्ष।
उसे यदि वटवृक्ष पर छोड़ें,
नहीं उछलता दूजे वृक्ष॥
वैसे मन भी मर्कट–सा है,
डोला करता इधर–उधर।
शास्त्र–वृक्ष में यदि रम जाये,
कभी न भागे इधर–उधर॥
मोह–वमन तत्क्षण हो जाता,
जिनवचनों में रमते ही।
निजनिधि निज में ही मिल जाती,
चिदानन्द रस पीते ही॥



पेट नहीं है कूड़ादान

बच्चो ! अपना पेट नहीं है, कोई कूड़ादान।
यहाँ–वहाँ खाया मनचाहा, मारी अपनी शान॥
टॉफी, बिस्किट, कोलड्रिंक ले, लिया पेट में डार।
दाँत, पेट पर देखो, बच्चो ! गहरी पड़ रही मार॥
शाकाहार व माँसाहार का, किया न कोई विचार।
बाजारू भोजन–पानी से, नष्ट हुए संस्कार॥
जैनाचार से भ्रष्ट हुए फिर, चले पाप की राह।
यौवन में ही बूढ़ों जैसे, रहे रोग से कराह॥
शुद्ध–सात्विक भोजन घर का,लाता नेक विचार।
स्वाद–लोभ तज, स्वास्थ्य मुख्य कर, करना शुद्ध आहार॥
तन से सक्षम, मन से दृढ़ बन, करना तत्त्वविचार।
आत्मध्यान, आनन्द पानकर, तजना सर्व विकार॥



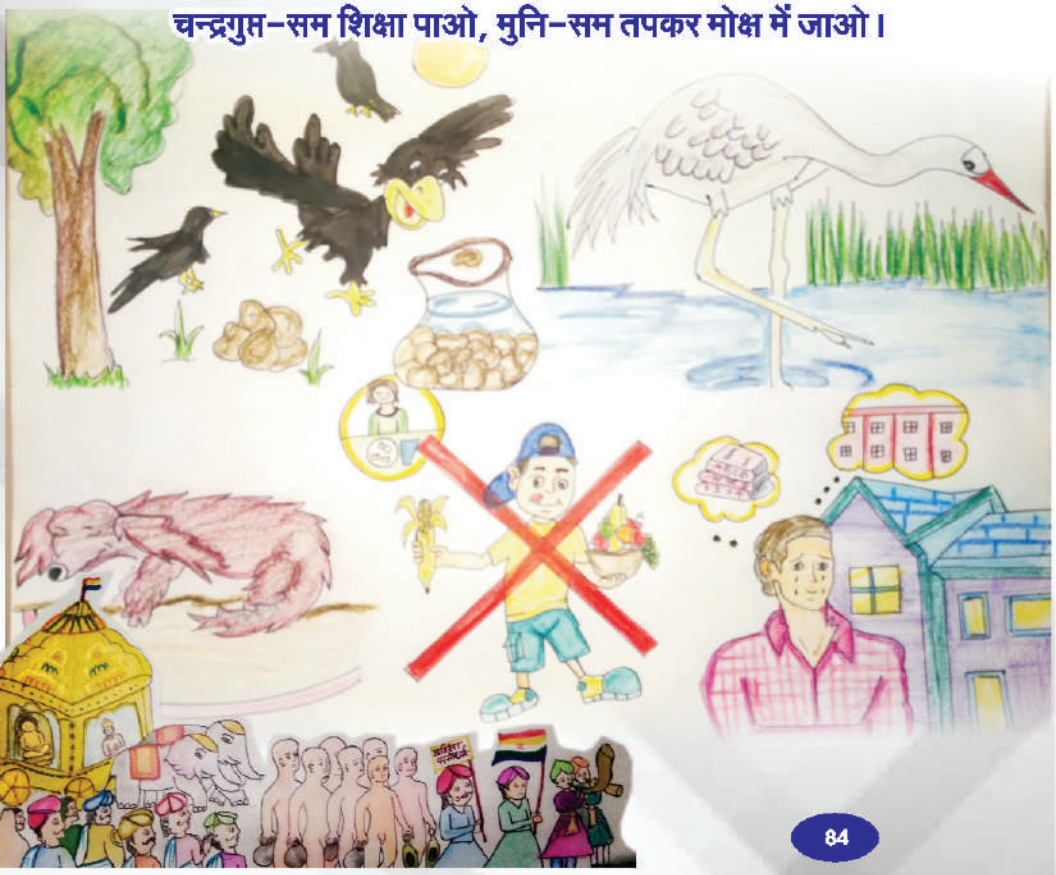
1.मूलमंत्र की महिमा

णमोकार है मंत्र महान,करता पापों का अवसान।
पंच प्रभु का इसमें धाम,सुख–शांति का कारण जान॥
सब मंगल में प्रथम सुमंगल,मुक्तिमार्ग पाथेय सुजान।
मोक्षप्रदायक मंत्र कहा है,स्वर्ग–प्राप्ति न अचरज मान॥

मंत्र–श्रवण से शान्ति–प्राप्त कर,
देव हुआ तत्क्षण वह श्वान।
बैल, नाग–नागिन, मेंढा भी,
बने मंत्र से देव महान॥
णमोकार की महिमा लखकर,
मंत्र जपो तुम आठों याम।
पंच प्रभु–सा ध्या निज आतम,
दुख तज, पहुँचो शिवपुर धाम॥

2.ज्ञानार्जन–मंत्र

कौए को जब दाना मिलता, काँव–काँव कर सब मिल चुगता।
ज्ञानार्जन, सत्कार्य करो जब,मित्रों को तुम साथ में लो तब ॥
बगुला जब स्व–लक्ष्य साधता, लक्ष्य प्रति रखता एकाग्रता।
जीवन में जो लक्ष्य बनाओ, दत्तचित्त हो उसको पाओ ॥
देखो कुत्ता जब है सोता, सजग रहे, बेसुध न होता।
सदा लक्ष्य प्रति सजग रहो तुम, सतत् बढ़ो और सफल बनो तुम ॥
भूख से कम तुम भोजन करना,आलस रहित लक्ष्य प्रति बढ़ना।
देह की आवश्यकता समझो,यथायोग्य उसको पोषण दो ॥
घर की सुख–सुविधाएँ त्यागो, कठिन राह से मत घबराओ।
सूरज–सम तपकर तुम चमको, काँटो संग रहकर तुम महको ॥
चन्द्रगुप्त–सम शिक्षा पाओ, मुनि–सम तपकर मोक्ष में जाओ।



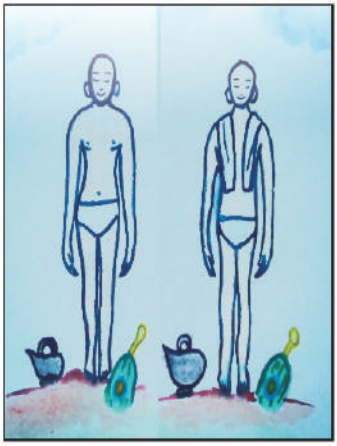
3.परिधान (सोरठा)

ऐसा हो परिधान,तन–मन स्वस्थ रखे सदा।
मौसम के अनुकूल, पद–अनुसारी हो सदा॥
कामोत्तेजक और, भड़कीला न हो कदा।
शील का रक्षक हो, बेढंगा न हो कदा॥
जो हो स्वदेशी वस्त्र, परदेशी न हो कदा।
संसाधन भी स्वदेशी,देशोन्नति कारक सदा॥

खण्ड–वस्त्र व लंगोट, क्षुल्लक जी रखते सदा।
ऐलक एक लंगोट,आर्यिका इक साड़ी रखें॥
मुनि होते हैं नग्न,यथाजात उनको कहा।
भगवन् भी निर्ग्रन्थ,सुख नहीं परिधान में॥













4.पाप सब त्यागो

पाप सब त्यागो रे भाई ! पाप सब त्यागो रे भाई !
पाप–भाव का फल सुनकर तो पाप तजो भाई !
हिंसा से धनश्री ने देखो, घोर महादुख पाये।
हिंसा त्यागो रे भाई ! हिंसा त्यागो रे भाई !
झूठ बोलकर सत्यघोष ने, बहुत पाप उपजाये।
झूठ वच त्यागो रे भाई ! झूठ वच त्यागो रे भाई !
कपट वेषधर तापस ने भी, चोरी कर दुख पाये।
चोरी त्यागो रे भाई !
चोरी त्यागो रे भाई !
कोतवाल ने शील–भ्रष्ट हो,
अपयश, कष्ट ही पाये।
कुशील त्यागो रे भाई !
कुशील त्यागो रे भाई !
लुब्धदत्त ने दुर्गति पायी,
परिग्रह में मन लाये।
परिग्रह त्यागो रे भाई !
परिग्रह त्यागो रे भाई !
पाप त्यागकर धर्म धरे जो,
स्वर्ग–मोक्ष सुख पाये।
पाप सब त्यागो रे भाई !
पाप सब त्यागो रे भाई !









5.एक कहानी

मेरी नानी, प्यारी नानी, मुझे सुनाओ एक कहानी।
उसमें हों राजा और रानी, पशु–पक्षी हों या मुनि ज्ञानी॥
तुम हो मेरे राजदुलारे, सबकी आँखों के हो तारे।
तुम्हें सुनाऊँ एक कहानी, ज्ञान–विराग–महासुखदानी॥
एक रात की बात बताऊँ, दो मुनियों की कथा सुनाऊँ।
कुलभूषण–देशभूषण नाम, गिरि पर ध्याते आतमराम॥
उनकी भक्ति करने आये, लक्ष्मण, सीता सह श्रीराम।
रात हुई वहाँ राक्षस आया, करने लगा कष्टकर काम॥
उसने मुनि पर किया उपसर्ग, उन पर फैंके बिच्छू–सर्प।
राम–लखन ने की रक्षा, भागा राक्षस ले शिक्षा॥
मुनियों ने समभाव रखा, निज शुद्धातम स्वाद चखा।
फिर जो लगाया शुक्लध्यान, उनने पाया केवलज्ञान॥
हर्ष–विभोर हुए श्रीराम, सीता, लक्ष्मण भी सुखधाम।
तत्क्षण आये थे वहाँ देव, करने लगे प्रभु की सेव॥
प्रभु ने दिया धर्म–उपदेश, हर्षित हुए सुन जीव अशेष।
राक्षस भी पछताता आया, क्षमा प्राप्तकर वह हर्षाया॥
मेरे प्यारे ! तुम भी सीखो, भेदज्ञान और भक्ति सीखो।
तुमने पायी और क्या शिक्षा ?
क्षमाभाव रखना ही अच्छा॥



यह भी पढ़ें :–



दूध

दूध पियो, भाई दूध पियो,देशी गाय का दूध पियो।
जीवन–शक्ति दायक श्रेष्ठ,पाचन में भी होता श्रेष्ठ॥
दूध में होता पीला तत्त्व,नेत्र–ज्योतिवर्धक है तत्त्व।
बल, बुद्धिवर्धक है दूध,बहु गुणकारी होता दूध॥
मत पीना भाई ! कृत्रिम दूध, इंजेक्शन से उतरा दूध।
डब्बा–बंद डेयरी दूध, फ्रिज आदि का ठंडा दूध॥
स्वादमात्र में लगता दूध, पौष्टिक तत्त्व रहित यह दूध।
हानिकारक है यह दूध, भ्रष्ट करे तन–मन यह दूध॥
तजो अमर्यादित यह दूध, मर्यादित ही पीना दूध।
अति विवेक रख, पीना दूध, भावविशुद्धि बढ़ेगी खूब॥



हरी सब्जियाँ

खाओ, हरी तोरई, गिलकी, पचने में हल्की होती।
सेम भी खाओ खून साफ कर, तन में ताकत है भरती॥
नेत्र–रोगहर परवल खाओ, ज्योति बढ़ाओ आँखों की।
लौकी, ककड़ी, खीरा खाओ, औषधियाँ बहु रोगों की॥
मौसम के अनुसार हों ताजीं, हरी सब्जियाँ खाओ खूब।
देख–शोधकर, योग्यरीति से, खाओ और खिलाओ खूब॥
आठें–चौदश आदि के दिन, हरी सब्जियाँ त्यागो तुम।
संयमपूर्वक खान–पान से, सुखमय जीवन जी लो तुम॥



1.शास्त्राभ्यास की महिमा

शास्त्राभ्यास की महिमा देखो !
शास्त्राभ्यास सदा करना।
आत्मा का अनुभव होता है,
मुक्ति-सुख मिलता क्रमशः ॥
क्रोधादिक की मंदता होती,
पाप-भावना मिटती है।
अति चंचल मन स्थिर होता,
विषयों की रुचि घटती है ॥
अल्पज्ञान में सर्वज्ञान हो,
ज्ञान से आनन्द नित बढ़ता।
उपादेय और हेय पिछाने,
ज्ञान आत्म-सन्मुख होता ॥
अतिशय सहित पुण्य बँधता है,
लोक में यश क्षण-क्षण बढ़ता।
शास्त्राभ्यास अवश्य करो भवि !
इतना लाभ त्वरित होता ॥



2.अणुव्रत पालो

अणुव्रत पालो रे भाई ! अणुव्रत पालो रे भाई !
सम्यग्दर्शन के संग हो तो उत्तम सुखदायी ।।
अहिंसा पाल, बहुत यश पाया, यमपाल चाण्डाल ने।
अहिंसा पालो रे भाई ! अहिंसा पालो रे भाई !
सत्यवचन कह, धन, यश पाया, धनदेव सेठ जी ने।
सत्यव्रत पालो रे भाई ! सत्यव्रत पालो रे भाई !
अचौर्यभाव में प्रसिद्धि पायी, वारिषेण जी ने।
अचौर्यव्रत पालो रे भाई ! अचौर्यव्रत पालो रे भाई !
ब्रह्मचर्य का प्रभाव बढ़ाया, महासती नीली ने।
ब्रह्मचर्य पालो रे भाई ! ब्रह्मचर्य पालो रे भाई !
परिग्रह–तृष्णा तज, यश पाया, जयकुमार नृप ने।
परिग्रह त्यागो रे भाई ! परिग्रह त्यागो रे भाई !
पंच पाप तज, अणुव्रत धारे, नागश्री जी ने।
अणुव्रत धारो रे भाई ! अणुव्रत धारो रे भाई !
इहभव यश, परभव सुख पाया, दृढ़व्रतधारियों ने।
अणुव्रत पालो रे भाई ! अणुव्रत पालो रे भाई !













3.शास्त्राभ्यास – प्रयोजन (रोला)



छह द्रव्यों का ज्ञान कहा व्यवहार प्रयोजन।
स्वानुभव से सुख पाना है निश्चय से प्रयोजन॥
आत्मा के अनुभव का फल है केवलज्ञान।
उसका फल है अनन्त सुख परमार्थ प्रयोजन॥
शास्त्रज्ञान के उत्तरोत्तर ये हैं प्रयोजन।
शास्त्राभ्यास से सिद्ध करो परमार्थ प्रयोजन॥
पाण्डित्य की प्राप्ति नहीं, हे भव्य ! प्रयोजन।
भेदज्ञान, वैराग्य–प्राप्ति है शास्त्र–प्रयोजन॥

4.स्वच्छता का मंत्र (दोहा)

साफ–सफाई जो करे, अंदर–बाहर माँही।
सुख–समृद्धि वहाँ बसे, रोग–मरी वहाँ नाहीं॥
प्रभु–भक्ति, सत्संगति,
सत्साहित्य महान।
आत्माश्रय, गुरु–आज्ञा,
करते मन अम्लान॥
नित्यकर्म, गृह–स्वच्छता,
पर्यावरण हो स्वच्छ।
भारत मेरा स्वच्छ हो,
दुनिया भी हो स्वच्छ॥
तन–मन की हो स्वच्छता,
जीवन बने महान।
जहाँ रहेगी स्वच्छता,
बसें वहाँ भगवान॥

5.अनुशासन (रोला)



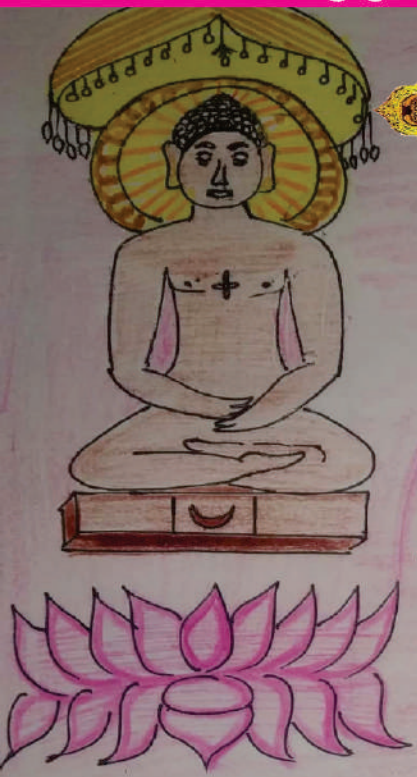
तीर्थंकर उपदेश कहा जाता है शासन।
गुरूओं का उपदेश कहा जाता अनुशासन॥
अनुशासन का पालन जग को सुख देता है।
अनुशासन से रहित जीव ही दुख पाता है॥
अनुशासन का पालन प्रथम स्वयं ही करना।
फिर पर को अनुशासित कर उसका हित करना॥
वह अनुशासन नहीं स्व-पर हित जो न करता।
अनुशासन का पालन ही तो जग-दुख हरता॥



यह भी पढ़ें :–

खान-पान विवेक

पिज्जा, बर्गर, मैगी छोड़ो, उदर-रोग के कारण हैं ।
टॉफी, चॉकलेट, बिस्किट छोड़ो, दंत, उदर को घातक हैं॥
चिप्स, कुरकुरे आदि छोड़ो, स्वास्थ्य को हानिकारक हैं।
पेप्सी, मिरिंडा आदि छोड़ो, किडनी-रोग के कारण हैं॥
धूम्रपान, गुटखा सब छोड़ो, कैंसर आदि के कारण हैं ।
बाजारू सब खान-पान तज, बीमारी के कारण हैं ॥
बिना विवेक स्वाद का लोभी, अपना संयम खोता है।
स्वाद नहीं, बस स्वास्थ्य मुख्य, श्रावक यह बात समझता है॥
शुद्ध और मर्यादित भोजन, करना और कराना तुम।
संयमपूर्वक खान-पान से, सुखमय जीवन जीना तुम॥



1.जिज्ञासात्मक प्रार्थना

हे प्रभु ! ज्ञान दो, प्रभु ! समाधान दो,
कैसे समझूँ ये सृष्टि-व्यवस्था सही ?
स्वर्ग दिखता नहीं, नर्क दिखता नहीं,
मेरु, सीमन्धर आदि भी दिखते नहीं।
सूर्य, तारे और ग्रह, चन्द्रमा की सतह,
कैसे हैं ये ? मुझे यह भी दिखता नहीं।
भौतिक विज्ञान कहता है, क्या वह सही ?
जैन-विज्ञान कहता है, क्या वह सही ?
कुछ समझ में नहीं आता, क्या है सही ?
हे प्रभु ! मार्गदर्शन तो कर दो सही।
भ्रांतियाँ सारी मिट जायें, जो मन गहीं।
ज्ञान प्रकटे निराकुल आनन्दमयी ॥



2.सम्यग्दर्शन के आठ अंग

अंजन के समान शंका तज, जिनवच में श्रद्धा रखना।
अंग निःशंकित धरना भाई ! अंग निःशंकित धरना ॥
अनंतमती-सी वांछा तजकर, व्रत में दृढ़ तुम रहना।
अंग निःकांक्षित धरना भाई ! अंग निःकांक्षित धरना ॥
उद्दायन नृप-सी ग्लानि तज, धर्मी की सेवा करना।
निर्विचिकित्सा अंग धरना भाई ! निर्विचिकित्सा अंग धरना ॥
रेवती रानी-सी श्रद्धा रख, तत्त्व-कुतत्त्व परखना।
अमूढ़दृष्टि अंग धरना भाई ! अमूढ़दृष्टि अंग धरना ॥
जिनभक्त सेठ-सा दूषण ढककर, निज-पर धर्म बढ़ाना।
उपगूहन अंग धरना भाई ! उपगूहन अंग धरना ॥
वारिषेण मुनि-सम धर्मी को, धर्म में दृढ़ तुम करना।
स्थितिकरण अंग धरना भाई ! स्थितिकरण अंग धरना ॥
विष्णुकुमार मुनि-सम रक्षा, साधर्मी की करना।
वात्सल्य अंग धरना भाई ! वात्सल्य अंग धरना ॥
वज्रकुमार मुनि-सम देखो, धर्म-प्रभावना करना।
प्रभावना अंग धरना भाई ! प्रभावना अंग धरना ॥
आठों अंग धरो समकित संग, समकित को निर्मल करना।
अष्ट अंग नित धरना भाई ! अष्ट अंग नित धरना ॥











3.टी.वी. (दूरदर्शन)

टेलीविजन, टेलीविजन,
टी.वी. उसको कहते हैं।
दूरदर्शन भी कहते उसको,
पल-पल देखा करते हैं॥
सबको दूर करे दूरदर्शन, जिनदर्शन, निजदर्शन से।
रिश्तों में भी दूरी लाता, मात-पिता सब परिजन से॥
फिल्में, सीरियल, कार्टून में, काल बिताया करते हैं।
कब आ जाये काल लुटेरा, यह परवाह न करते हैं॥
बसे प्राण टी.वी. में इनके, बंद करो तो निकलते हैं।
चेतन प्राण हैं सत्य जीव के, उसमें चित्त न धरते हैं॥
ज्यों पानी बिन मीन तड़पती, ये बिन टी.वी. तड़पते हैं।
बच्चे, बूढ़े, सास, बहू, एक-साथ बैठकर देखते हैं॥
नीला-जहर कहा आँखों से, पी संसार बढ़ाते हैं।
नेत्र-दोष, उपयोग-भ्रष्ट और स्वास्थ्य-नष्ट ये करते हैं॥
काम-भोग, भव-बन्धन बढ़ते, विषय हलाहल पीते हैं।
सप्त व्यसन और पाप-कषायें, राग-द्वेष ही बढ़ते हैं॥
आर्त-रौद्र दुर्ध्यान करें नित, नारक-पशु दुख सहते हैं।
कृत-कारित-अनुमोदन का फल, श्री गुरु एक ही कहते हैं॥
अतः व्यर्थ अनुमोदन करके, पाप-बंध क्यों करते हैं ?
धर्म कथाएँ पुण्य बढ़ातीं, उनको क्यों न पढ़ते हैं ?
जिनदर्शन, निजदर्शन, तप, स्वाध्याय, ध्यान नित करते जो।
समय नहीं ये व्यर्थ करें, टी.वी. से दूर ही रहते वो॥
फेंक सको यदि नहीं इसे तो, प्रवचन-भजन देख-सुनना।
वीतराग-वर्धक चिन्तन से, अपना जन्म सफल करना॥



4.सप्त व्यसन

पाण्डव कथा बताती हमको,
जुआ कभी मत खेलना।
राजा बक की कथा बताती,
माँस का भक्षण मत करना॥
द्वारिका–दहन की कथा है कहती,
मदिरापान नहीं करना।
चारुदत्त की कथा सिखाती,
वेश्यागमन नहीं करना॥
ब्रह्मदत्त नृप कथा बताती,
कभी शिकार नहीं करना।
सत्यघोष की कथा सिखाती,
चोरी कभी नहीं करना॥
रावण–चरित्र संदेशा देता,
पर–स्त्री में मत रमना।
एक–एक जब व्यसन दुखद है,
सातों का फिर क्या कहना ?
अतः श्री गुरु कहते हमसे,
सातों व्यसन त्वरित तजना।
आओ, पढें प्रथमानुयोग,
हम सीखें सुखपूर्वक जीना॥







यह भी पढ़ें :-

स्वास्थ्य



रोग-रहित तन-मन यदि चाहो,तो तुम नित व्यायाम करो।
आत्मसाधना, तप, प्रभावना में तन का उपयोग करो॥

चलना है कसरतों की रानी, पैदल चल नित काम करो।
वाहन की निर्भरता छोड़ो, स्वस्थ, सुखी, समृद्ध बनो॥

साधु-संघ का जीवन देखो, स्वाधीनता से भरपूर।
पग-विहार नित करते रहते, पराधीनता से हैं दूर॥

प्राणायाम, योग, आसन भी, व्यायाम के अंग कहे।
खेलकूद, कृषिकार्य, तैराकी, कसरत के ही रूप कहे॥



साफ- सफाई, चौका-चूल्हा, स्वस्थ बनाते तन-मन को।
इन्हें छोड़ जिम में जाकर जो, स्वेद बहाते मूरख वो॥

स्वाध्याय, सत्संग, ध्यान से, मन को स्वस्थ बनाओ तुम।
स्वाध्याय से स्वयं को लखकर, चिदानन्द ही ध्याओ तुम॥

तन को रोगों का घर जानो, तन से भिन्न निजात्म लखो।
मन से निज-पर का निर्णय कर, आत्मध्यान में मन भी तजो॥

स्व-स्वरूप में स्थित होना, निश्चय नय से स्वास्थ्य कहा।
तन-मन से चेतन को पृथक् ध्या, मुक्ति में रह स्वस्थ सदा॥

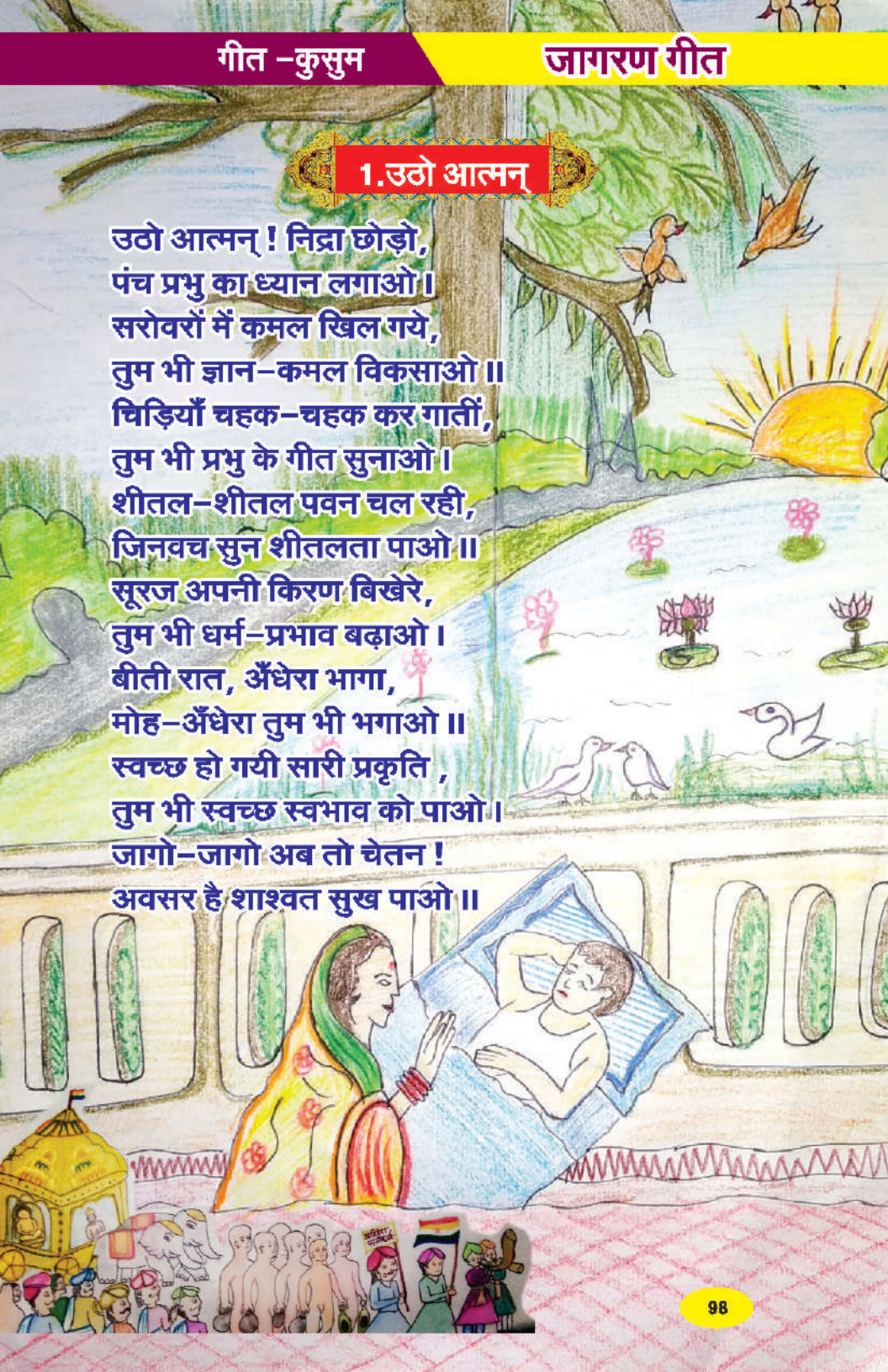




जागरण गीत

1.उठो आत्मन्

उठो आत्मन् ! निद्रा छोड़ो,
पंच प्रभु का ध्यान लगाओ।
सरोवरों में कमल खिल गये,
तुम भी ज्ञान–कमल विकसाओ ॥
चिड़ियाँ चहक–चहक कर गातीं,
तुम भी प्रभु के गीत सुनाओ।
शीतल–शीतल पवन चल रही,
जिनवच सुन शीतलता पाओ ॥
सूरज अपनी किरण बिखेरे,
तुम भी धर्म–प्रभाव बढ़ाओ।
बीती रात, अँधेरा भागा,
मोह–अँधेरा तुम भी भगाओ ॥
स्वच्छ हो गयी सारी प्रकृति ,
तुम भी स्वच्छ स्वभाव को पाओ।
जागो–जागो अब तो चेतन !
अवसर है शाश्वत सुख पाओ ॥



2.सो जा मेरे वीर !

तुम तो सो जा मेरे वीर ! तुम तो सो जा मेरे वीर !
वीर की अँखियाँ लग जायें,
सुबह उठेगा वीर ॥ टेक ॥
सुबह–सुबह तुम जल्दी उठना,
उठकर णमोकार को जपना ।
जपकर निज शुद्धातम ध्याना,
पा जाना जग–तीर ॥ तुम तो .... ॥1॥
सुबह को फिर जिनमन्दिर जाना,
मन्दिर में जिनदर्शन पाना ।
जिनदर्शन पा, निज को ध्याना,
पा जाना सुख–नीर ॥ तुम तो .... ॥2॥
मन्दिर में स्वाध्याय तू करना,
स्वाध्याय से स्वयं को लखना ।
स्वयं को लख, समता रस चखना,
हो जाना अशरीर ॥ तुम तो .... ॥3॥
मन्दिर से आ, खीर बनाना,
खीर बना, आँगन में जाना ।
आँगन से मुनि को पड़गाना,
उन्हें खिलाना खीर ॥ तुम तो ..... ॥4॥
दिन में तुम विद्यालय जाना,
पढ़–लिखकर सुख–सम्पत्ति पाना ।
देश–धर्म का मान बढ़ाना,
बन जाना युगवीर ॥ तुम तो ..... ॥5॥









3.चेतन-चेतन (लोरी)

चेतन चेतन चेतन चेतन चेतन चेतन चेतन चेतन चेतन चेतन चेतन चेतन ॥ टेक ॥

मेरे वीरा ! सो जाना रे, सुबह-सुबह उठ जाना रे।
जिनदर्शन नित करना, छना ही पानी पीना।
रात्रिभोजन न करना, समता, संयम से रहना ॥
अष्ट मूलगुण धरना, सच्चे श्रावक तुम बनना।
मैं तो ज्ञानानन्द ध्याऊँ, तुम्हें जिनवाणी सुनाऊँ ॥
मैं तो हूँ चेतन चेतन, तुम भी हो चेतन चेतन, चेतन चेतन ...।1। (टेक)

श्री जिनवर के गुण गाना रे, साधु-समागम पा जाना रे।
न्याय से धन कमाना, विवेक से खर्च करना।
सदा संतोषी रहना, दान सदा ही करना ॥
देश की उन्नति करना, धर्म जग में फैलाना।
मैं तो ज्ञानानन्द ध्याऊँ, तुम्हें जिनवाणी सुनाऊँ ॥
मैं तो हूँ चेतन चेतन, तुम भी हो चेतन चेतन, चेतन चेतन ...।2। (टेक)

भव, तन, भोग तज देना रे, मुनिधर्म धारण कर लेना रे।
सदा सामायिक करना, स्वानुभव-रस तुम चखना।
उपसर्ग, परिषह सहना, पर से हट, स्व में बसना ॥
निज में ही रम जाना, निजानन्द ही पा जाना।
मैं तो ज्ञानानन्द ध्याऊँ, तुम्हें जिनवाणी सुनाऊँ ॥
मैं तो हूँ चेतन चेतन, तुम भी हो चेतन चेतन, चेतन चेतन ...।3। (टेक)

मुक्ति के मारग में चलना रे, निज शुद्धातम ही ध्याना रे।
मोह को दूर भगाना, अनन्त चतुष्टय पाना।
भव-भव के दुख नशाना, मुक्ति पा फिर न आना ॥
आनन्द-आनन्द ही पाना, ध्याना चिदानन्द ध्याना।
मैं तो ज्ञानानन्द ध्याऊँ, तुम्हें जिनवाणी सुनाऊँ ॥
मैं तो हूँ चेतन चेतन, तुम भी हो चेतन चेतन, चेतन चेतन ...।4। (टेक)

4.जिनवाणी की लोरी

जिनवाणी की लोरी, ज्ञानानन्द की डोरी।
भव्यों को हितकारी, राह दिखाती न्यारी ॥ टेक ॥
छोटी-छोटी ज्ञान-किरण में,
सकल विश्व भर देती है।
ज्ञान प्राप्त हो जैसे-जैसे,
आनन्द से भर देती है।
शुद्धातम के सन्मुख करती,
पर से दृष्टि हटाती है।
होती आनन्दकारी, होती है दुखहारी।
इस भव और परभव में, होती है सुखकारी।
जिनवाणी की लोरी .....।1।
राग-द्वेष के अंधकार में,
भिन्न दिखाती चेतनतत्त्व।
ज्ञान-किरण की डोर थमाकर,
दे देती है वह सम्यक्त्व।
भव-तन-भोग से रुचि छुड़ाकर,
करती ज्ञायक में अनुरक्त।
संयम का हो पलना,
और भेदज्ञान की डोरी।
शाश्वत सुख लो तत्क्षण,
क्यों करता है देरी ?
जिनवाणी की लोरी ..... ।2।



1.शिक्षण-शिविर में आओ



आओ शिविर में, शिक्षण-शिविर में,
ज्ञान-यज्ञ में आओ।
तत्त्वज्ञान और भेदज्ञान से,
ज्ञानानन्द-रस पाओ ॥ टेक ॥

जिनवर दर्शन-पूजन-भक्ति,
जिनवचनामृत पाओ।
पूजन-प्रशिक्षण, शास्त्रों का शिक्षण,
विद्वत्समागम पाओ ॥1॥ आओ शिविर में ... ॥

शास्त्र-सुरक्षा-सज्जा-विनय से,
शास्त्र-रहस्य को पाओ।
शास्त्रज्ञान से मन-स्थिर कर,
पाप-कषाय घटाओ ॥2॥ आओ शिविर में ... ॥
अल्पज्ञान में विश्वज्ञान पा,
ज्ञान से आनन्द बढ़ाओ।
विषयरुचि तज, आत्मरुचि कर,
मुक्ति का आनन्द पाओ ॥3॥ आओ शिविर में ... ॥

ज्ञान-अर्थ-श्रमदान के द्वारा,
धर्म-प्रभाव बढ़ाओ।
समता-संयममय जीवन जी,
नरभव सफल बनाओ ॥4॥ आओ शिविर में ... ॥

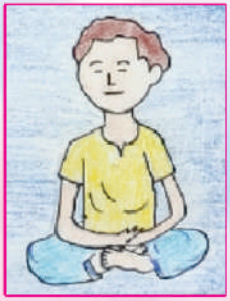


2.चलो चलें हम पाठशाला

चलो चलें हम पाठशाला, चलो चलें हम पाठशाला।
पाठशाला में जिनवाणी की, चर्चा सुन हम हर्षायें।
जिनवाणी से पंच प्रभु को जानें, उनको ही ध्यायें॥
पंच प्रभु जो राह दिखाते, वही दिखाती पाठशाला।
चलो चलें हम पाठशाला, चलो चलें हम पाठशाला।1।
सदाचार-समतामय जीवन, जीकर हम नित सुख पायें।
देखें और दिखायें आतम, चिदानन्द में रम जायें॥
सुख पाने का मार्ग एक है, वही दिखाती पाठशाला।
चलो चलें हम पाठशाला, चलो चलें हम पाठशाला।2।
निज-पर हितकर बढ़ते जायें, फिर निज में ही समा जायें।
सरिता-सदृश बहें और फिर, सागर में ही समा जायें॥
जीवन का बस यही लक्ष्य है, वही सिखाती पाठशाला।
चलो चलें हम पाठशाला, चलो चलें हम पाठशाला ।3।



1. संवेग भावना



संसार, देह और भोग सभी से,
हो विरक्त प्रभु को ध्याऊँ।
जिनवर ने जो मार्ग बताया,
उस पर चल निज सुख पाऊँ॥
वीतरागमय धर्म धारकर,
धर्म का फल शिवपद पाऊँ।
धर्म का फल आनंदमयी,
उसके फल में ही रुचि लाऊँ॥
धर्म के सहचर शुभभावों से,
हो शुभबंध उसे जानूँ।
तीर्थंकर और चक्रवर्ती पद
को भी तज शिवपद पाऊँ॥
हो ऐसी संवेग भावना,
तब भी निज में सुख मानूँ।
वीर प्रभु के शासन में ही,
निज में निज निधि पा जाऊँ॥

2. आत्मनिर्भर भारत



भारत हुआ स्वतंत्र, पर हो आत्मनिर्भर भी।
परावलंबी सोच से, आजादी ना टिकती॥
देश के ही माल से, देशी बनें सब चीज।
आयात ना करना पड़े, कोई विदेशी चीज॥
खाना हो या पहनना, आना हो या जाना।
साधन हो स्वदेशी, वही उपयोग में लाना॥
स्वास्थ्य ही देता सदा, घर का बना भोजन।
ज्ञान और विवेक, शुद्धि का हो संयोजन॥
वैसे ही स्वदेशी सदा, हित देश का करता।
धर्म, अर्थ, काम तथा सुख से भरता॥
आओ करें निर्माण, अपने देश भारत का।
विश्वगुरु विश्वबंधु, जो सदा रहा॥
सत्य और ईमान, बुद्धि और मेहनत से।
सम्मिलित प्रयास से, देश प्रेम से॥
हर भारतीय यदि ठान ले, बस देशहित करना।
भारत के लिए जीना, और उसके लिए मरना॥
सपना सफल होगा, आत्मनिर्भर भारत का।
लौटकर फिर आएगा, सम्मान भारत का॥

